

मुद्रक—

इश्वरलाल जैन स्नातक

आनन्द प्रिंटिंग प्रस,

गोपालजी का रास्ता,

जयपुर सिटी ।



ग्रन्थमाला की पुस्तक मिलने का पता—

१—रतनचन्द कोचर

हुन्गीगरो के भैरु का रास्ता

जौहरी बाजार जयपुर सिटी

२—कान्तिलाल कालीदास शाह

नं० ३३ चंद्रवह्ना स्ट्रीट

वस्त्रकला नं० ।

ॐ श्री धीतरागाय नमः ॐ

त्रिकाल-देवकन्दन विधि

भामाधिक पापघ विधि सहित

—००—

संप्रद्वर्ता—

रतनचन्द्र कोचर

3122
ज ६१

कुम्भिनगरो क भैरुजी का रासना,
जौहरी बाजार, जयपुर।

—००—

प्रकाशक—

श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला,

जयपुर।

— ॐ —

मूल्य बारह आना

धीर सं० ४३६ } प्रथम संस्करण { वि० सं० २००७
आत्म सं० ५५ } १००० { ३० सन् १९५०

दो शब्द

ग्रन्थमाला की तरफ में 'विक्रम ज्येष्ठ वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि संहिता' नामक पुस्तक भाई श्री रतनचन्द्रजी कोचर द्वारा सभ्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्णरूप से लिखी गई है जिससे प्रत्येक सज्जन निम्नो क्रिया विधि का सही ज्ञान नहीं हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम कन्दन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियंत्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक को अधिक से अधिक कार्याया छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से जिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे हैं। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जरूरी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को सभ्रह करने का श्रेय श्री भाई रतनचन्द्रजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् बाहीलाल जीवरान शाह पालनपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिमने लिये दोनों सज्जन हार्दिक वचनवाद के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने "आनन्द प्रेस" में इसको छापने और उसके मुद्रक सशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते हैं। हम आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनवृद्ध लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियाँ न पृथक् ध्यान रखते हुए भी अल्प दोष से या प्रमादवश को भूल चुक रहे गइ हो उनकी सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। विनीत—

प्रबन्धक—श्री जिनराणी प्रचार ग्रन्थमाला, जयपुर।

❀ प्रस्तावना ❀

मर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वभीष्टार्थदायिने ।

सर्वलघिनिधानाय, श्री गौतमस्वामिने नम ॥

इस "त्रिकाल दयानन्दन विधि-सामायिक षोडश विधि महित" नाम की पुस्तिका "श्री चिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला" जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह उड़े हर्ष की गत है । जो व्यक्ति विधि विधान के लिये मरि तो रहता है लेकिन अनपठित होने के कारण या म्रता के विस्मृत होने के कारण क्रिया नहीं कर सकता उसके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें मदद नहीं ।

गुजरात सौराष्ट्र में एसी पुस्तकें गुजराती भाषा में दली जाती हैं किन्तु वे गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये मरी पुस्तिका का अत्यन्त आवश्यकता थी वे कमी अब इस "ग्रन्थमाला" की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूर हो जायगी ।

आगे से तो इस जडवाद के जमान में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिन्धि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है । जो क्रिया कर रह हैं वे क्रिया का मर्म विशेष कम समझत हैं । परिणाम यह होता है कि क्रिया रस वृत्ति ज्यादा दखने में नहीं आती । आन तो एरान्त ज्ञान को

मानने वाले या परान्त क्रियावादी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है । महान पूर्वधर श्री मद् उमास्वामिनाथक “तत्त्वार्थ सूत्र” में फरमाते हैं कि—

सम्पद्दर्शनं ज्ञान चारिण्यणि मोक्षमार्ग —

ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष — जैसे समुद्र में तूने का नान तो है किन्तु हाथ पाव नहीं हिलाने से बट कर्मी पार उतर सकता है ? तापर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है ।

मेरा ख्याल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये कमी प्रस्तावना क्यों ? लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति परान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया म्पि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिष है उनके लिये एसी पुस्तिका सहायतारूप होगी । ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है ।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये “श्री विनयाणी प्रचार ग्रन्थमाला” और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूँ ।

वि० स० २०१७ आसाढ़ दूना
शुक्ल पंचमी शुद्धवार
न० २० जुनाद सप्त १९५०

भवदीय—
वाहीलाल जीवराम शाह,
पालनपुर (गुजरात)

(पौषध विधि)

जो श्राविक श्राविका पौषध करना चाहे उनको सुबह राह प्रतिप्रमण करना चाहिये, पौषध करने में इस प्रकार यम्प्राणि उपकरण होन चाहिये—मुहपत्ति, चरबला, उनी आमन, शुद्ध घोनी, न्गरामन, मात्रा के लिये जति समय पहाने की घोती, नारु साफ करने का रुमाल या ग्नेडिया, सिर व धदन पर ओढ़ने के लिये कम्बल, सधारिया—भोने के लिये, रुहामण, गरम पाना, गरमा चूना पाना में डालने के लिए, सोने व ल दोनों जानों के छदा में नीय जतु का यानना के लिए कु डल याना रुट के दो पीये ।

श्राविक श्राविका पौषध करने से पहिले शुद्ध यम्प पहान कर चौकी (थाजोठ) आदि न्ग स्थान पर पुम्नक उपमाला (नवकार धाली) आदि रखकर, जमीन प उम्नर, आसन त्रिछानर, चरबला और मुहपत्ति लेकर बैठे । बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुम्नरे आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुम्नक यम्पि की स्थापना के समुग्र करके नवकारयम्प पढ़ें ।

नमो अरिहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयगियाण ।
नमो उपज्झायाण । नमो लोए सव्वमाहूणं । णमो पच
नमुकारो । सव्वपायप्पणामणो । मगलाण च मयमि । पढम
हम मगल ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पचिन्धियमवम्लो, तद् नपदिठ्यमरेरगुत्तिररो । चउ-
 विहकमायमृको, इथ अद्दाम्म गुणेदि मजुत्तो ॥१॥ पच मह-
 द्यपजुत्तो पचविहायारपानणममत्थो । पचममिथो तिगुत्तो,
 हत्तीमगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(तेसे पचिन्धिय कहे, यत्ति प्रथममे वम स्थान पर आगत्य
 प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहा पचिन्धिय नहीं रहना । पीछे)

इद्दामि समाममणो । वदिउ जापणिञ्जाण निमीहि-
 ञ्चाण मत्थण्ण उदामि ।

इद्दामारण सदिमह भगवन् ! इरियारहिय पडिक्क-
 मामि ! इच्च इच्छामि पटिक्कमिऊ, इगियाउत्तियाण, रिग-
 हण्णाण ममणागमणे पाणवमणे वीयवमणे हरिपवमणे
 थोसा उत्तिग पणग दग मट्टी मक्कटामताणा सक्कमणे, जे
 म जीवा रिगहिया, णगट्टिया, वडदिया, नेडदिया, चउरि-
 दिया, परिदिया, थमिहिया, उत्तिया, हेलिया, मघादिया,
 मघट्टिया, परियागिया, किलामिया, उदिया, टाणाथो टाण
 मक्कामिया, नीवियाथो वरगेविया तस्म मिच्छामि दुक्क ।

तस्म उत्तराकरणेण, पापच्छित्तकरणेण, निमोहीकर-
 णेण, निमत्तीकरणेण, पाराण वम्मण निग्गायणद्धाए, ठामि
 काउस्समो ।

अन्नत्थ ऊम्मिण्ण, नीमग्गिण्ण, त्थामिण्ण, ह्दीण्ण,
 नमाइण्ण, उट्टुण्ण, गायनिमग्गेण, ममलिण पित्तमुच्छाए,

सुदुमेहिं श्रगमचालेहिं, सुदुमेहिं खेलमचालेहिं, सुदुमेहिं
दिद्विमचालेहिं, एवमाङ्गणहिं आगारहिं अमग्गो अपिराहियो
दुज्ज मे माउम्मग्गो । जाय अग्गिताण भगवताण, नमुसा-
रण न पारमि ताव जाय टाणेण भोगेण भागेण अप्पाण
पामिरामि ।

(यहा एक लोगस्म जा या चार नक्कार का काग्मग्ग करना
पीछे प्रगट लोगम्म रहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जाअगर, धम्मतिथपर निग्गे । अग्गित
क्किट्ठस्स, चउर्वाम पि केवली ॥१॥ उमममनिय च वट,
सभग्गमभियुट्ठण च सुमड च । पउमप्पद्द सुषाम, निण च
चदप्पद्द वट ॥२॥ सुणिहिं च पुण्डित्त, मीअल्ल-मिज्जम
वासुपुज्ज च । विमलमणत्त च जिण, धम्म मतिं च
उटामि ॥३॥ कुयु अर च मत्ति, वट सुणिसुत्तय नमि-
निण च ॥ उटामि रिद्धनेमि, पम्म तद्द चट्टमाण च ॥४॥
एव मए अमिदुत्था, विट्ठयस्यमला पहीणत्तरमग्गा । चउ-
र्वाम पि जिणवरा, तिथयरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिय-
उत्तिय-महिया, जे ए लोगम्म उत्तमा मिद्धा । आग्गो
हिलाम, ममात्तिपरमुत्तम टितु ॥६॥ चट्टमु निम्मल्लयरा,
आड्ढेसु अहिय पयामयग । माग्गत्तरग्गभीग, मिद्धा मिद्धि
मम टिमत्तु ॥७॥

(पीछे ग्रमाममण देना)

इच्छामि यमाममणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए
मत्थण्ण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । पौपध
मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “ इच्छ ”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे यमासमण नेना—)

इच्छामि यमाममणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीदिआए
मत्थण्ण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् पौपध
सदिसाहुँ ? “ इच्छ ” इच्छामि यमाममणो वदिउ जाणणि-
ज्जाए निमीदिआए मत्थण्ण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह
भगवन् । पौपध ठाऊं “ इच्छ ”

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुनव गिनना ।

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आपरियाण ।
नमो उपज्जायाण । नमो लोए सत्र साइण । एसो पच
नमुकारो । सत्र पापप्पणामणो । मगलाण च सवेमिं ।
पडम हउइ मगल ॥

[पीछे ‘इच्छ’करी भगवन् पसय करी पौपध ण्डक उघरायोनी
एसे धोलकर निम्न पोसह ण्डक स्थय उघर यत्ति गुह या वहील
हो तो ये उघरावै]

“ करेमि भते ! पोसह, आहार-पोसह देसयो सत्रयो,
सरीरमवार पोसह सत्रयो, बभचेर पोसह सत्रयो, अत्रा-
वार-पोसह सत्रयो, चउध्विह पोसहे ठामि । जाणदिउस ?

१ सिर्फ दिनका पौपध करना हो तो ‘जावदिउम’ दिन रात
का करना हो तो ‘जाव अहोरत्त’ और सिर्फ रातका करना हो तो
‘जावसेसदिउम अहोरत्त’ कहना चाहिये ।

पञ्जुरामामि दुषिह तिरिहण, मणेण वायाए ऋयेण न
करेमि, न कारवेमि । तस्म भते । पट्टिक्कामामि, निंदामि,
गरिहामि अण्णाण वोसिरामि ॥ १ ॥”

इच्छामि एमाममणो वट्टिउ जावणिज्जाए निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छ”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलहना । पीछे)

इच्छामि एमाममणो वट्टिउ जावणिज्जाए निर्मीहि
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
सामायिक सदिसाहु ? “इच्छ” । इच्छामि एमाममणो
वट्टिउ जावणिज्जाए निर्मीहिआए मत्थएण वदामि ॥
इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छ”

(एसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नमस्कार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरि-
याण । नमो उरज्झयाण । नमो लोण सत्रसत्तहण ।
एमो पच नमुकारो । सत्र पाउप्पणामणो । मगलाण च
सत्तमि । पढम हव मगल ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन पसाय करी सामायिक दहक उधरानोजी
ऐसे जोलकर ‘करमि भत’ स्वय उधर याद गुण या उहील हो तो
चे उधरारै]

करमि भते । सामाड्य, सायज्ज जोग पद्यस्यामि । जाय
पोमह पञ्जुगामाभि, दृग्निहं निग्निहण मणेषु गायए
राणण न करेमि न शरयेमि तम्प भते । पटिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अण्णाण बोम्मिगामि ॥

[पद्ये]

इच्छामि समाममणो वट्टिउ जायणिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सट्ठिमह भगवन्
नेसणे सट्ठिमाहु ? “इच्छ” इच्छामि समाममणो वट्टिउ
जायणिज्जाए निमीहियाए मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण
सट्ठिमह भगवन् नेसणे ठाउ ? “इच्छ” इच्छामि समाम
मणो वट्टिउ जायणिज्जाए निमीहियाए मत्थएण उदामि ॥
इच्छाकारेण सट्ठिमह भगवन् मज्झाय सट्ठिमाहु ? “इच्छ”
इच्छामि समाममणो वट्टिउ जायणिज्जाए निमीहियाए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सट्ठिमह भगवन् मज्झाय
रु ? “इच्छ”

[एमि पहुर दोना हाय चोडकर तीन नयकार गुणना]

इच्छामि समाममणो वट्टिउ जायणिज्जाए निमीहियाए
मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सट्ठिमह भगवन् ! बहुउल्लङ्घ

यत्ति पौषध म राइ प्रतिज्जमण कर तो अट्टाईनेसु सूत्र पढने
के पूर्व दा समाममण कर बहुवेल सत्तिसाह और बहुउल्ल करमि,
का अतिशय ।

मदिमाहें ? "इच्छ" इच्छामि सुमासमस्यो उदिउ नामसि-
ज्जाए निर्मादिगए मत्थण्य वदामि ॥ इच्छा कारेण
सदिमह भगरन् ! वहुवेल मरेमि ? "इच्छ" -

इच्छामि सुमासमस्यो उदिउ नामसि-
ज्जाए निर्मादिगए मत्थण्य वदामि ॥ इच्छा कारेण
सदिमह भगरन् पटिलेहाण
करू ? "इच्छ"

पीछे मुहपत्ति, चरखला, आमन, कनेरा, (सुत की प्रागर्ही) ।
और धोती, ये पाच चीजें पटिलेहे । पाट पटिवहना की हुन चीजें
पहिन ल और हमके गद— पुन समासमस्य म्हर

अन्नत्य उममिएण, नीसमिएण, सामिएण, छीएण,
 इमाइएण, उडुएण, गयन्निमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
 सुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
 दिट्ठिमचालेहिं, एरमाइएहिं आगागहिं अमग्गो अरिगहियो
 हुज्ज मे काउस्मग्गो । जाय अरिहताण भगरताण, नमुक्का-
 रेण न पारेमि ताय काय ठाण्णेण मौण्णेण भाण्णेण अप्पाण
 वोमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नत्रकार का काउस्मग्ग करना
 पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यपरे त्रिणे । अरिहते
 पित्तहस्स, चउवीस पि फेउली ॥१॥ उमभमज्जिय च वद,
 समयमभिणदण च सुमड च । पउमप्पह सुपास, जिण च
 चदप्पह वद ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत, सीअल मिज्जस
 वामुपुज्ज च । विमलमगत च जिण, धम्म सतिं च
 वदामि ॥३॥ कुट्टु अर च मल्लि, वद मुणिसुन्वय नमि-
 निण च ॥ वदामि रिट्ठनेमि, पाम तह वद्धमाण च ॥४॥
 एव मए अभियुआ, विहृयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
 वीस पि जिणवरा, तिथ्यपरा म पमीयतु ॥५॥ क्लितिय-
 वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उच्चमा सिद्धा । आरुग्गवो-
 हिलाम, ममाहिवरमुत्तम िंतु ॥६॥ चदसु निम्मलपरा,
 आउवेसु अहिय पयासपरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धिं
 मम िन्तु ॥७॥

(पीछे गमासमण तेना)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहिआए
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! पमाय
करी पडिलेहणा पडिलेहणो ? "इच्छ"

एमा कहकर ब्रह्मचर्य प्रतधारी जिमी बटे के उत्तरामन की
पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् !
उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छ"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलहना । पीछे)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
उपधि सदिसाहुँ ? "इच्छ" । इच्छामि समासमणो
वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहिआए मत्थएण वदामि ॥
इच्छाकारेण मदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? "इच्छ"

कहकर प्रथम पडिलहन से धारी रहे हुए उत्तरामन (दुपट्टा)
भात्रा (पेशात्र) करने जानेवा बन्ध और रात्रि-पौषध करना हो
तो सवारिया, फम्बल बगैरह धरत्र पडिलहे । पाछु हटामण
लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि समासमणो ! वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहि-
आए मत्थएण

इन्द्राकारेण सदिसद् भगवन् ! इरियाग्रहियं पडिक-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिकमिऊ, इरियाग्रहियाए, विराह-
णाए । गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
श्रोमा उर्तिग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासत्ताणा सकमणे, जे
मे जीरा विराहिया एगिदिया वइदिया, तेइदिया, चउरिं-
दिया, पचिंदिया, अभिहया वतिया, लेमिया, सघाडया,
सघट्टिया, पगियारिया, शिल्लामिया, उइरिया, ठाणाओठाण
सकामिया, जीवियाओ वगरोविया तस्म मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उतरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण रिसोदिकरणेण,
रिमल्लीकरणेण, पाणाण कम्माण निग्घायणट्टाए, ठामि
काउस्सग ॥

अन्नत्य उससिएण, नीससिएण, त्तामिएण, छीण्ण,
वमाइएण, उट्टुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुट्टुमेहिं थगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेत्तमचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्टिसचालेहिं, एवमाइएहिं थागारेहिं अभग्गो अरिराहितो
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुक्का-
रेण न पारमि ताव काय टाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहा एक लोगस का था चार नयकार का काउस्सग करना
पीछे प्रगट लोगस कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस उज्जोसगरे, धम्मतित्थयर जिणे । अरिहते

क्लृप्तस्त, चउमीम पि केवली ॥१॥ उमभमजिथ च वद,
 सभमभिनदण च सुमद च । पउमप्पह गुपास, जिण च
 चदप्पह वंद ॥२॥ सुणिदिं च पुप्फदत, मीअल मिज्जस
 वासुपुज्ज च । विमलमणत च जिण, धम्मं मरिं च
 वदामि ॥३॥ बुधु अर च मल्लि, वदि सुणिसुज्जय नमि-
 जिण च ॥ वदामि रिट्ठनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
 एउ मण अमिअ, विहुपरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
 र्वाम पि विणवरा, वित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ क्लित्तिप-
 यदिय-महिया, ज ए लोगस्त उत्तमा सिद्धा । आहग्गो
 हिलाभ, समाहिवस्सुवम दिंतु ॥६॥ चदसु निम्मलयरा,
 आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागररगभीरा, मिद्धा मिद्धि
 मम दिमतु ॥७॥

बूढ़ा कचरा निकाल उसको दरना और उसम सचित्त
 एकेन्द्रिय जीव का कलुवर निकल तो गुरु से आलोकणा लेना
 और प्रम जीव निरले तो उसरी रक्षा हो वहा रखना और
 स्थापनाचार्य के सामने उसी जगह रखे होकर फिर—

इच्छामि क्षमामणो वदिउ जाणिज्जाण निसीहिआण
 मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्क
 मामि इच्छ । इच्छामि पडिक्कमित्त, इरियावहियाण विराह-

गाण । गमणागमणे, पाण्डुमणे, वीपवमणे, हरियकमणे,
श्रोमा उतित्-पणग-दग-मङ्गी-मवडासताणा मरुमणे, ज
म जीरा विराहिया एगिडिया उडडिया, तेडंठिया, चउरि-
डिया, पचिठिया, अभिठिया चत्तिया, लेमिया, सघाड्या,
सघडिया, परिपारिया, किलामिया, उडडिया, ठाणाथोटाण
मरुमिया, जीवियाथो वरुविया तस्म मिच्छामि दुग्ड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायिद्विचरणेण विमोहिण्येण,
विमङ्गीकरणेण, पाराण इम्भाण निग्घायणट्टाण, ठामि
राउस्सग ॥

अचत्थ उममिएण, नीममिएण, एामिएण, छीएण,
जभाडण्य, उड्डण्य, वायनिमगेण, भमलिण पित्तमुच्छ्राए,
मुग्गेहि अगमचालेहि, मुग्गेहि खेलमचालेहि, मुग्गेहि
निडिमचालेहि, एममाडणहि आगारेहि अमग्गो अनिगहिथो
हुज्ज मे राउस्सगो । जाय अरिहताण भगरताण, नमुवा-
रण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोखेण भाखेण अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहा एउ लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग करना
पीछ प्रगट लोगस्स कहना, वह तीचे लिग अनुसार)

लोगस्स उज्जोप्रगर, धम्मतिथयर निये । अरिहत
कित्तइम्मं, चउरीमं पि केवली ॥१॥ उमभमजिअ च उड,
मभवमभिएणदम्म च सुमइ च । पउमप्पइ सुवाम, जिग च

चदप्पद षट् ॥२॥ सुनिहि च पुष्पदत्त, सीमल मिञ्जम
 वासुपुञ्ज च । विमलमणत च निण, धम्म सति च
 वटामि ॥३॥ कुट्टु अर च मत्ति, उट्टे सुणिसुत्तय नमि-
 जिण च ॥ उदामि गिट्टनेमि, पाम वह उट्टमाण च ॥४॥
 एव मए अमिधुआ, विहययमला पहीणनग्मरणा । चउ
 रीम पि जिणररा, नित्ययरा मे पमीयतु ॥५॥ इत्तिय-
 वदिय महिया, जे ण लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आत्तमागे
 हिलाम, समाहिवग्गमुत्तम णितु ॥६॥ चदमु निम्मलयरा,
 आह्वंसु अहिय पयामयरा । सागरवग्गभीरा, सिद्धा सिद्धि
 मम टिमतु ॥७॥

यत् म तीर नगह "अणुनागह जस्सुग्गहो" वह काजा
 परम्बरा (डातता) और "जेमिरे" तीर दफ वह फिर पहिल
 नी नगह आरर मरर का देव यत्न करना सो इसी पुस्तक में ।

यत् म जज छह उहो दिन यत् तव पउत्तु पोरिसी पडे ।

पऊण-पोरिसी की विधि

इच्छामि एमाममणो उट्टिउ जाणग्गिज्जाण निर्माहियाण
 मत्थाण्ण वटामि ॥ इच्छासारेण मत्तिमह भगवन् । बहुपडि-
 पुएणा पोरिसी ? इच्छं

इच्छामि एमाममणो उट्टिउ जाणग्गिज्जाण निर्माहिया-
 ण्ण मत्थाण्ण वटामि ॥ इच्छासारेण मत्तिमह भगवन् ।
 इगियावदिय पडिकमामि इच्छ । इच्छामि पडिकमिउ,

हरियाग्रहियाण विराहणाए । गमणागमणे पाण्डमणे,
 वीपकमणे, हरियकमणे, शोभा उतंग-पगग दग मनी
 मण्डामताणा सक्रमणे, जे मे जीरा विराहिया णमिदिया
 वेहदिया, तेहदिया, नउरिंदिया, परिंदिया, अमिइय
 उत्तिया, लेमिया, मघाडया, मघडिया, पगियागिया,
 फिलामिया, उदरिया, टाणाओ टाणु मकामिया, जीवियाओ
 ववरोरिया तस्त मिद्रामि दुक्कडं । तम्म उतरीररणेण, पाय-
 च्छित्तकण्णेण, रिसोहीररणेण, रिसतीररणेण, पाणण
 कम्मण निग्घायण्डाण, ठामि काउम्मग ॥

अथ उममिण्ण, नीममिण्णं, एामिण्ण, द्वीण्णं,
 जमाइएण उड्डुएण, वायनिमग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छ्राण,
 सुहमेहि अगमचालेहि सुहमेहि सेलमचालेहि, सुहमेहि
 दिट्ठी सचालेहि, एममाइएहि आगारेहि अमग्गो अपिसादिसो
 हुज्ज मे काउस्तग्गो । जाय अरिहंताण भगवताण नमु
 वारेणं न पारेमि, ताउ कायं ठाणेण मोण्णेण भाण्णेण
 अप्पाण वीमिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्तग्ग करना काउ-
 स्तग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिरियवरे निणे । अरिहते
 नित्तस्स, चउरीम पि केवली ॥१॥ उतममनिअ च वंद,
 सभवमभिण्णदण च सुमह च । पउमप्पह सुपास, जिण च

चदप्पहं वद ॥२॥ सुविहिं च पुप्फटत, सीधल-मिज्जम
वासुपुज्ज च । विमलमणन च जिण, धम्म मतिं च
वदामि ॥३॥ कुप्पु थर च मल्लि, वदे सुग्गिसुच्चय नमि-
निण च ॥ वदामि रिडनेमिं, पाम तद्द चद्वमाण च ॥४॥
एव माण अभिजुआ, पिण्डुयस्यमला पदीणजरमरणा । चउ-
पीम पि जिणवरा, तित्यवरा मे पमीयतु ॥५॥ मित्तिव-
वदिय-महिमा, जे ए लोगम्म उत्तमा सिद्धा । आम्मरो-
हिलाभ, समाहिपरमुत्तम दितु ॥६॥ चद्वेमु निम्मलवरा,
आट्ठेसु अहिय पयासवरा । सागरवगमीरा, पिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि एमाममणो वदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्यएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ।
पडिलेदण वरू ? “इच्छ”

मेमे कह कर मुहपति पडिलेहना । पीछे गुरु महाराज हो ते
उनको विधि रूहित वन्दना करना, यदि गुरु महाराज के सा-
राइ प्रति क्रमण न क्रिया हो तो गुरु वन्दन इस प्रकार कर ।

★ गुरु वटन ★

इच्छामि एमामिमणो वदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आए मत्यएण वदामि ॥

इच्छाकारेण सदिमह भगवन् इरियावदिय पडिक-
मामि “इच्छ” । इच्छामि पडिकमिउ, इरियावदियाए, विरा

हृत्पाण गमणागमणे पाणवमणे वीयकमणे हरिपङ्कमणे
 श्रोत्रा उत्तम पणग दग भट्टी मङ्कडामताणा सरुमणे, जे
 मे जीवा त्रिराट्टिया, एगिट्टिया, बडदिया, तेडदिया, चउरि-
 दिया, पण्णदिया, अभिहया, उतिया, लेमिया, सधाडया,
 मघट्टिया, परियाणिया, किलामिया, उदिया, टाणाथो टाण
 सरामिया, जीणियाथो बवरोणिया तम्म मिच्छामि दुक्कट ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोढीकर-
 णेण, विमल्लीकरणेण, पायाण कम्माण निग्घयणट्ठाए, ठामि
 काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उमसिएण, नीमसिएण, खामण्ण, छीण्ण,
 जभाइण्ण उड्डुएण, वायनिसग्गेण, ममलिण, पित्तमुच्छाए,
 सुदुमेहि अगमचालेहि सुदुमेहि खेलमचालेहि, सुदुमेहि
 त्तिट्ठी सचालेहि, ण्यमाएहि आगारेहि अमग्गो अनिगदियो
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहताण भगवताण नमु-
 धारेण न पारेमि, तार काय टाणण मीणेण भाण्णेण
 अप्पाण वोमिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउ-
 स्सग्ग पारने प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, घम्मनित्थियर निणं । अरिहते
 कित्तडस्स, चउरीम पि केरली ॥१॥ उमभपनिअ च वंद,
 ममवमणिणदण च सुमह च । पउमप्पहं सुपाम, निण च

चदप्पह वट ॥२॥ सुविडि च पृष्पदत, मीळल निज्जस
 वामुपुञ्ज च । निमलमणत च निण, पुम्प सति च
 उदामि ॥३॥ इधु अर च मडि, उद मुणिसुव्यय नमि-
 निण च ॥ वदामि रिद्धनेमि, पाम वह वट्टमाण च ॥४॥
 एव मण अभिदुआ, विट्टपरयमला पहीणनरमग्गा । चउ-
 जीस पि निणवरा, विधपरा मे परीयतु ॥५॥ रिक्खिय-
 वदिय-महिपा, वे ण लोमस्म उत्तमा मिट्टा । आग्गो
 हिलाभ, ममाहिनरमुत्तम दित्तु ॥६॥ चट्सु निम्मलयरा,
 आग्गेसु अहिय पयासपरा । नागवरगमीग, मिट्टा मिट्ठि
 मम डिमत्तु ॥७॥

इच्छामि समासमणो वदिउ जारणिज्जाण निर्माहि-
 थाण मथणण वंतामि ॥ इच्छाकारेण मन्मिह भासन ।
 राड मुहपत्ति पहिलेहुँ ? “इच्छ”

(मुहपत्ति पहिलेकर नीचे मुत्तव द्वादशवर्त वंता म्पे)

मुगुप्पदना सूत्र

इच्छामि समासमणो वदिउ जारणिज्जाण निर्माहि-
 थाण अणुत्ताणह मे मिउग्गह निर्माहि, अहाराय काय-
 मपास, समणिज्जो मे विलाभी अण्णकिल्लण्य वट्टमुमेण
 मे राडअरदक्खी ? जत्ता मे ? जारणिच्च च मे ? एवमेमि
 समासमणो राडय उट्टम्म, आरस्सिआए पडिरमामि,
 समासमणण, गट्थाए आमायणाए, नित्तीमत्तयराए, ज

किंचि मिच्छाए मण्डुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए
 कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, मरकालियाए मर
 मिच्छोरयाराए सत्र धम्माइकमणाए आमायणाए जो मे
 अइयारो रुओ तस्स एमासमणो ! पडिक्कामामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ (विर)

इच्छामि एमासमणो ! वदिउ जारणिज्जाए निमीहि-
 आए । अणुनाण्ह मे पिउग्गह निमीदि, अहोकार्यं
 कायसफास एमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलताण बहु-
 सुमेण मे, राइअरइकतो ? जत्ता मे जणणिज्ज च मे एामेमि
 एमासमणो राइअ वइक्कम्म पडिक्कामामि एमायनणार्थं,
 राइआण आमायणाए तिचीसत्रयाराए, ज किंचि मिच्छाए
 मण्डुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
 मायाए लोभाए मरकालियाए मर मिच्छोरयाराए सत्र
 धम्माइकमणाए आमायणाए जो मे अइयारो रुओ तस्स
 एमासमणो ! पडिक्कामामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसिरामि ॥

इच्छाकरेण सदिसह भगवन् राइअ आलोउ ? 'इच्छ'
 आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो रुओ, रुइओ वाइओ
 माणमियो उस्सुत्तो उम्मगतो अरुणो अरुणिज्जो
 दुब्भाओ दुग्गिचित्तियो अणायागे अणिच्छिअच्चो
 असावगपाउग्गो नाणे दमणे चरित्ताचरित्ते सुए सामइए ।

निष्क गुणीण, चउएहे रमायाण पचएहमणुवयाण,
 तिष्क गुणरयाण, चउएह मिक्कायाण धारमरिठस्स
 सावगधम्मम्म ज रडिच्च ज पिरादिच्च तस्स मिच्छामि
 दुक्कड ॥

मन्वस्मरि राडअ दुच्चित्तिअ दुब्भामिच्च दुच्चिट्ठिअ,
 इच्छामारेण सदिमह भगवन् । “इच्छ” तस्स मिच्छामि
 दुक्कड ॥

(पन्थास आदि पन्थ हों तो उपर मुनय हो नके धान्णा
 देना और पदस्य न हा नो एक रमासमण देकर)

इच्छामि सुमाममणो रडिउ जावणिज्जाए निमीहिआण
 मत्थएण वदामि । “इच्छकारि सुहगड सुखवप शरीर
 निगराघ मुग्गमयम याग निरुहते होनी । स्वामी माना
 हैंजी भात पाणी का लाम बनानी ।”

इच्छामि सुमाममणो ! रडिउ जावणिज्जाए निमीहि-
 आण मत्थएण वदामि ॥

सुमाममण देकर गड़ा होने और दोनो हात जोड़कर —

इच्छामारेण सदिमह भगवन् । अश्चुट्ठियोमि अच्चि
 तर राडयंॐ खामेउ ? “इच्छ खामेमि राडय” जसिंचि
 अपत्तिअ, परपत्तिअं मत्त पाणे पिणए वेयावन्ने थालावे

कथारा बने पीढ़े जहा “राडय” बोलना लिखा है वहां
 “देवसि” बोलना !

सलावे उचासणे समामणे अतरभासाए उपरिभासाए जकिचि
मज्झ विणय परिहीण सुट्टम वा तायर वा तुंमे जाणइ
अइ न जाणामि तस्म मच्छामि दुक्कड ॥

इच्छामि छमासमणो वदिउ जानणिज्जाए निमीहि
आए मत्थएण वदामि ॥ “इच्छाकारेण मदिमह भगवन्
पसायकरी पच्चक्याण का आदश दीजियेजी ।

(जो पच्चक्याण करना हो वो लेना ।)

एगासण तथा एकलठाणा^६ का पच्चक्याण,
उग्गए सूरे नमुक्कासहिय, पोरिमि, साठपोरिसि,
मुट्टिसहिय, पच्चक्काड । उग्गए सूरे चउच्चिहपि आहार—
असण, पाय, राहम, साडम, अन्नत्यणाभोगेण, सहमा-
गारेण, पच्चक्कालेण, दिमामोहेण माहुवयणेण, महत्तरा-
गारेण, सव्वसमाहिनत्तियागारेण । एगासण पच्चक्काड,
अन्नत्यणाभोगेण, सहमागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थमसट्टेण,
उक्किरत्तविवेगेण, पच्चमक्किणएण, पारिठाणगियागारेण,
महत्तरागारेण, सव्वसमाहिनत्तियागारेण । एगासण

^६ एकलठाने के पच्चक्याणमें ‘आउंठणवमारणेण’ इतना
पाठ छोड़कर और सब पाठ एगासणके पच्चक्याणका ही बोलना
चाहिये । एकलठाने में मुह और दाहिने हाथके सिवा अन्य
किसी अंगको नहीं हिलाना चाहिये और जीम कर उसी जगह
च उन्विहार कर लेना चाहिये ।

पञ्चकखाड, त्रिविहपि आहार-अमण, खाडम, साडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, सागारियागारेण, आउट-णपमारणेण, गुरु अ-भुट्टाखेण, पारिट्टावणियागारेण, महत्तरागारेण, स-अममाहिवत्तियागारेण, पाणम्म लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण बहुलेवेण वा, समित्थेण वा, असित्थण वा वोमिरड ।

आयविल पञ्चकण

उग्गए घुरे नपुक्कामिअ पोरिमि साडपोरिमि मुट्टिम हिअ पञ्चकखाड । उग्गए घुरे चउविहपि आहार-अमण, पाण, खाडम, साडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, पच्छन्नकालेण, दिमामोहेण, माहुपयणेण, महत्तरागारेण, स-अममाहिवत्तियागारेण । आयविल पञ्चकखाड, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थमसट्टेण, उक्खित्त विवेगेण, पारिट्टावणियागारेण, महत्तरागारेण, स-अममाहिवत्तियागारेण, पणम्मण पञ्चकखाड, त्रिविहपि आहार-अमण, खाडम, साडम, अन्नत्थणामोगेण, सहमागारेण, सागारियागारेण, आउटणपमारणेण, गुरु अ-भुट्टाखेण, पारिट्टावणियागारेण, महत्तरागारेण स-अममाहिवत्तियागारेण, पास्तण लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, समित्थेण वा, असित्थेण वा वोमिरड ।

सूरे उग्गाए, अम्भत्तट्ट पञ्चमपाइ । त्रिभिहंपि आहार-
असण, साडम, साडम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण,
पारिद्धाणियागारेण, महत्तरागारेण, सत्तसमाहिणत्तिया
गारेण । पाणहार पोरिमि, साडपोरिमि, मुट्टिमडिय
पञ्चमपाइ; अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पञ्चद्वन्नालेण,
त्तिसामोहण, साटुवमणेण, महत्तरागारेण, मत्तसमाहिणत्ति-
यागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेणेण वा, अच्छेण वा,
बहुलेवेण वा, समित्थेण वा, अमित्थेण वा वोत्तिरइ ।

चउत्तिहार उपवास-पञ्चमपाण

सूरे उग्गाए अम्भत्तट्ट पञ्चमपाइ । चउत्तिहंपि आहार-
असण, पाण, साडम, साडम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसा-
गारेण, पारिद्धाणियागारेण, महत्तरागारेण सत्तसमाहि
वत्तियागारेण वोत्तिरइ ।

★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को
जल्द जाना चाहिये । इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना,
उत्तरासन करना, चरखला दायीं बगल में और मुहपत्ति दाहिने
हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो बसली ओढ़ना, और
उपाध्य (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीन बार “आवस्तहि”
बहुके मौन पने इरियाममिति (जीवजतु) नेगते हुए श्री जिन
मन्दिरजी में जाय । वहा तीन बार “तिसीहि” कह करके ।
मूल नायकजी के सम्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रद
क्षिणा देवे । पीछे रंग मण्डप में प्रवेश कर दर्शन, मुक्ति करे—

ॐ दर्शन स्तुति ॐ

दर्शन देव देवस्य, दर्शन पापनाशनम् ।

दर्शन स्वर्ग सोपान, दर्शन मोक्षसाधनम् ॥१॥

दर्शनाद् दुरितव्रंसी, वन्दनाद् नाञ्छितप्रद ।

पूजनान् पूरु श्रीणा, चिन साक्षात्सुखम् ॥२॥

त्रिनग नापरु तु धणी, मही महोगे महाराज,

महोटे पुण्ये पामिथी, तुम दरिमण हूँ आन ॥३॥

आन मनोरथ सवि कल्या, प्रपत्त्या पुण्यवञ्चोल,

पाप कर्म दूरे टल्या, नाठा दुख टदोल ॥४॥

वानापरणीय क्षय करी, दर्शनानरणीय कर्म,

वेदनीय कर्म दूरे करी, टाञ्चु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि एवाममणो वदिउ चारणिञ्चाण निमीहिआए

मत्थण्ण वदामि ॥

इच्छामारेण सदिसह भगवन् ! इरियाअहिय पडिक्-

मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊ, इगियाअहियाण, निराह-

णाए । गमणागमणे, पाणवमणे, नीयकमणे, हरियवमणे,

ओमा उर्विग-पण्ण-दग् मट्टी-मवटामजाणा मरुमणे, जे

मे जीया निराहिया एगिठिया वइठिया, तेइदिया, चउरि-

दिया, पचिदिया, अभिहया उत्तिया, लेमिया, मध्वाडया,

सधट्टिया, परियापिया, रितामिया, उदरिया,

मकामिया, चो उवरोमिया वस्म

तम्म उत्तरीररुणेण, पापिन्नत्तररण विमोदिररुणेण,
विमल्लीररुणेण, पाराण इम्माण निग्पायणट्टाण, ठामि
काउस्सग्ग ॥

अयत्थ उम्मिएण, नीससिएण, तामिएण, धीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
सुद्धुमेहिं अगसचालेहिं, सुद्धुमेहिं येत्तमचालेहिं, सुद्धुमेहिं
दिट्ठिमचालेहिं, एवमाइएहिं आगारहिं अमग्गो अपिराहियो
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अग्गिताण भगवताण, नमुक्का-
रण न पारेमि ताव थाय ठाणेण मोखेण भ्वाणेण थप्पाण
वोमिरामि ।

(यह एक लोगस्य का या चार नवकार का काउस्सग्ग करण
बीछे प्रगट लोगस्य कहना, घट नीचे लिख अनुसार)

लोगस्य उज्जोअगरे, धम्मतिथियर जिणे । थरिदंत
कित्तइस्स, चउवीम पि केवली ॥१॥ उत्तममज्जिय च वदे,
सभवमभियदण च सुमद च । पउमप्पह सुपाम, निण च
चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल मिज्जस
वातुपुज्ज च । विमलमणत च जिण, धम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुयु अर च मल्लिं, वद मुणिसुव्वय नमि-
जिण च ॥ वदामि रट्टनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अभियुआ, विट्ठयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणरा, तिथपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिय-

प्रदिय-महिषा, जे ए लोगसुम उत्तमा सिद्धा । आरुग्गरो-
हिलाभ, ममाहिररमुत्तन दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलपरा,
आट्चेसु अहिय पयामपरा । सागरवरगभीरा, मिद्धा सिद्धि
मम दिंतु ॥७॥

इच्छामि एवाममणो प्रदिउ जागणिज्जाए निमोहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

(इम प्रकार तीन गमासमण देकर—)

इच्छाकारण सदिमह भगरन् ! चैत्यवदन ररु ?

“इच्छ”

सकलदुशलमल्लि, पुत्ररापतमेधो ॥

दुरिततिमिरमानु, कल्प-वृक्षोपमान ॥१॥

भयजल निधिपोत सर्व सम्पत्ति हतु* ॥

स भवतु सतत व ध्येसे शान्तिनाथ

—ध्येसे पार्वनाथ ॥२॥

॥ चैत्यवन्दन ॥

भ्रान देव अरिहन्त नमू, समरु तोरा नाम ।

ज्या ज्या प्रतिमा चिनत्तणी, त्या त्या करू प्रणाम ॥१॥

शतुञ्जय श्री आदि देव, नेम नमू गिरनाथ ।

तारगे श्री अजितनाथ, आरू अष्टम बुहार ॥२॥

अष्टापद गिरि उपरे, चिन चोवीमी जोय ।

मणिमय भूरति मानसू, भरते भराचा सोय ॥३॥

ममेत शिरार तीरथ बडा, ज्या वीसे जिन पाप ।

(वैभारक गिरि उपरे, श्री वीर जिनेश्वर सप ॥४॥

माडवगद नो राचियो, नामे देव सुषाम ।

घटपम वहे चिन समरतां, पडुचे मन की आस ॥५॥

जे ऋचि नामतित्य, समे पायालि माणुसे लोण ।

जाड जियविवाड, ताड सगाड वदामि ॥१॥

नमुत्तुण अरिहताण मगवताण ॥ १ ॥ आगराण,

वित्ययराण, सपसजुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिसमीहाण,

पुरिसरपुडरीआण, पुरिसरगघहत्थीण ॥३॥ लोमुत्तमाण,

लोगनाहाण, लोगट्टियाण, लोगपईयाण, लोगपज्जोअग-

राण ॥ ४ ॥ अमपटयाण, चक्रुदयाण, मगदयाण,

सरणदयाण बोदिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसियाण,

धम्मनायगाण, धम्मस्गरहीण, धम्मरचाउरतचक्रहीण

॥६॥ अण्णडिहपरनाणडसणधराण; विअट्टुउमाण ॥७॥

निणाण जाययाण, विनाण तारयाण, बुद्धाण देइयाण,

मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सच्चन्नुण सच्चदरिसीण, सिअमप-

ल्लमहअणतमअणम-आराहमपुणराचि, मिद्धिगडनाम-

धेय, ठाण सपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥९॥

जे अ अइआ मिद्धा, जे अ भविस्मतिणाणए काले ।

सपडअ वट्टमाणा, सवे तिरिहेण वदामि ॥१०॥

जायेति चेद्वाडं, उद्धेय अहे अ तिरिय लोए अ ।
सगाड ताड उदे, इह सतो तत्थ मताइ ॥१॥

इच्छामि सुमाममणो वडिउ जाणखिज्जाए निमीहि-
अए मत्थएण उदामि ॥

जाणत कणि माहू, भरहेरणय महाविठेहे अ । सवेमि
तेमि पणयो, तिपिहण तिदड निरियाए ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यापाध्यायमरसाधुभ्य ॥ -

श्री ऋषभद्वजी का स्तवन ।

जग जीवन जग बढाला हो, मारु देवानो नडलालरे ।
मुग दीठे मुस उपने, दर्शन अति ही याणद लालरे ॥१॥
आखडी अनुज पाएडी, अष्टमी रामी समभल लालरे ।
वदन ते शारद चदलो, गणी अतिगसाल लालरे ॥२॥
लक्षण अगे निराचता, अडहीय सहस उदार लालरे ।
रेखा कर चरणा टिके, अभितर नहीं पार लालरे ॥३॥
इद्र चन्द्र रनि गिरितणा, गुण लइ धर्यायु अग लालरे ।
भाग्य क्रिया वसी आचीयु, अचिरज एह उत्तम लालरे ॥४॥
गुण सधला अगे कर्या, दूर कर्या समी दोष लालरे ।
वापरु जग प्रिये धुएयो, डजो सुखनो पोए लालरे ॥५॥

उपसगदर पाम, पास उदामि रम्मघणमुक् । निसहर
निसनिवास, मगलरघ्नाण-आगाम ॥१॥ निमहर फुलिगमत,

कठे धारेइ जो सया मणुयो । तस्म गहरोगमारी, दुङ्करा
 जति उग्राम ॥२॥ चिड्डुठ दूरे मतो, तुज्जक पणामो वि
 बहुफलो होइ । नरतिरिण्णु नि जीया, पावति न दुक्कपदोगच्च
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चित्तमणिकुप्पपायवन्महिण ।
 पावति अग्निग्घेण, जीया अयरामर ठाण ॥४॥ इय सद्दुयो
 महायस, भत्तिभरनिभरेण हियण्ण । ता देव दिज्जमोहिं,
 भवे भवे पामनिणचद् ॥५॥

(अत्र दोनों हाथ जोडकर जय वीश्वराय कहना)

जय वीश्वराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभायथो
 मयव ! भवनिवेश्यो मग्गाणुसारिथ्या इट्टफलमिदि ॥१॥
 लोगनिरुद्धाओ, गुम्जणपूआ परत्थकरण च । सुहगुम्जोगो
 तज्ययणसेरणा आभवमएडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ नि
 नियाण वधण वीयराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
 सेरा, भवे भवे तुम्ह चलणाण ॥३॥ दुक्कएएओ कम्मएओ,
 समाहिमरण च वीहिलाभो अ । सपज्जउ महण्ण, तुहनाह
 पणाम करणेण ॥४॥ मर्रमगलमागल्य, मर्रकल्याण कारणम् ।
 प्रधान मर्रधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥५॥

अरिहतचेइआण, करेभि काउस्सग्ग, वदखणत्तियाए,
 पूअणवत्तियाए, सवारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, रोहि
 लाम वत्तियाए, निरुग्गमग्गवत्तियाए, मिट्ठाए, मेहाए,
 धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
 काउस्सग्ग ॥

अन्नतथ उमसिएण, नीममिएण, एासिएण, छीएण,
जभाडएण, उड्डुएण, वायनिमग्गेण, भमलीए पित्तमुञ्जाए,
सुट्टुमेहि अगसचालेहि, सुट्टुमेहिं खेलमचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एवमाडएहिं आगारेहिं अमग्गे अरिराहियो,
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहताण भगवताण नमु-
कारेण न पारेमि ताण काय टाणेण मोखेण भाणेण
अप्पाणु वोसिरामि ।

(यह एक नवधार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो
पाभ्याय सर्वमाधुभ्य ” कह कर थुड कहना)–

आदि जिनर राया जाम सौरन काया,
मरुट्टी माया, घोरी लडन पाया ।
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल गिरीराया मोक्ष नगरी मिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के समुत्त पञ्चकरण करना, पीछे जिन मंदिर
जी से निकलते हुये तीन दफे “आवस्सहि” कहना और उपाश्रय
में तीन दफे “निसीहि” कह कर प्रवेश करना और १०० पावडे
भूमि से आगे गयाह तो इरियावहि करने—

इच्छामि सुमासमणो वदिउ जाणखिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वदामि ?

इच्छाररण सदिसह भगवन् !
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्कमिऊ,

पडिक्क-
रिराह-

गए , गमदागमणे, पाणकमणे, वीपकमणे, हरियकमणे,
 मोसा उरिग-पणग दग मड्डी मड्डासताणा सकमणे, जे
 ने जीरा तिराहिया एगिदिया रेडदिया, तेडदिया, चउरि-
 देया, पचिदिया, अमिहया वत्तिया, लेसिया, सघाड्या,
 सघट्टिया, परियात्रिया, किलामिया, उहरिया, ठाणाथोठाण
 सकामिया, जीवियाथो वरगेविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीरुखेण , पायच्छिनरुखेण निमोहिरुखेण,
 तिसल्लीरुखेण, पायाण रम्माण निग्घायणुट्ठाण, ठामि
 काउस्सग्ग ॥

अन्नत्य उमसिएण, नीससिएण, एसिएण, छीएण,
 जभाइएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिण पिनमुच्छाए,
 सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
 दिट्टिसचालेहिं, एरमाडणहिं आगारेहिं अमग्गो अरिराहिथो
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहताण भगरताण, नमुक्का-
 रेण न पारेमि ताण काय ठाणेण मोखेण भाखेण अप्पाण
 वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना
 पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगर, धम्मतिथियर तिखे । अरिहते
 तित्तडस्स, चउरीस पि केरली ॥१॥ उसभमनिय च वद,
 मभरमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुफाम, जिण च

चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, मीयल सिज्जम
 मापुपुज्ज च । तिमलमण्ण च जिण, धम्म सत्तिं च
 वदामि ॥३॥ कुट्टु थर च मल्लि, वद सुणिसुत्तय नमि-
 निण च ॥ वदामि रिट्टनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
 एण मए अभिजुया, तिहुययमला पहीणजरमरणा । चउ-
 वीस पि जिणवरा, नित्थयरा मे पमीयतु ॥५॥ किञ्चित्प-
 वदिय महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गणे
 हिलाभ, समाहियरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा,
 आइचेसु अहिय पयासयरा । मागरपरगभीरा, मिट्ठा सिद्धिं
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि एवाममणो वडिउ जाणणिज्जाण निमीहि-
 थाए मत्थण्ण वदामि ॥ इज्जामारेण सदिमह भगवन् !
 गमणागमणे कथालोउ ? “इच्छ”

इरिया समिति, माया समिति एण्णा समिति, आदान
 भउ मत्त निसेण्णा समिति, पारि ठापनिका समिति, मन
 गुप्ति, वचन गुत्ति, काय गुत्ति, ये पाच समिति, तीन
 गुप्ति, आठ प्रवचन माजा श्रावकण्णे धम, सामायिक
 पोसह लीधे, अच्छी रीति से पाली नर्हा, एहन तिराधना

पोषध इने के बाद अगर राइ प्रति क्रमण करे तो उहाँ सात
 लाख, अठारा पापस्थान की एलोयणा आने ... दुदले
 कहना, ... कहना।

हुई होय, ते सविहु मन उचन काया ए कृती मिच्छामि
दुषण्ड ॥

(इसके परचात दोपहर में देवर्षदन करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सज्जय १ योल । देवर्षदन अकाल में (११॥। घजे से २० यजे तक) न करें । यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १४ से कार्तिक सुदी १४ तक) में दोपहर के देव-र्षदन सं पहिले भूमि प्रमार्जन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन बार पहिले भूमि प्रमार्जन करना चाहिए । उसकी विधि इसी पुस्तक के प्रष्ठ १७ की २८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर प्रष्ठ १९ की १३ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार कर ।

पञ्चमखाण पारने की विधि

पगासण, एरुलठाणा, आयथील, आदि त्रिप्रिहार उपवास के प्रत का पञ्चमखाण पारना होतो निम्न प्रकार सं क्रिया करें । परंतु मं याहून का देवर्षदन करके पञ्चमखाण पारे ।

इच्छामि खमासमणे वदिउ जाप्रणिज्जाए निमीहिधाए
मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगरन् ! इरिपात्रहिय पडिक्-
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्मिऊ, इरिपात्रहियाए, निराह-
णाए , गमणागमणे, पाणवमणे, वीथक्मणे, हरियक्मणे,
ओसा उर्निग-पणग-दग-मट्टी प्रकडाम्पजाणा सकमणे, जे
मे जीवा निराहिया एर्निर्दया वइदिया, तेइदिया, चउरि-

दिया, परित्रिया, अभिद्वया रनिया, लेसिया, मथाइया,
मघट्टिया पगियानिया, मिलामिया, उद्विया, टाणाथोटाण
मरामिया, जीनियाथो वरगेरिया तम्म मिच्छामि दुषड ।

तम्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विमोहिकरणेण,
विमलीकरणेण, पायाण कम्माण निग्यायणट्टाण, टामि
काउस्मग्ग ॥

अत्रत्य उममिएण, नीममिएण, एममिएण, छीएण,
जभाइएण, उट्टुएण, वायनिसग्गेण, भमल्लिण पित्तमुच्छाण,
सुट्टुमेहिं अगमत्तानेहिं, सुट्टुमहिं खेलमचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्टिमत्तानेहिं, एरमाइएहिं आगारहिं अभग्गो अरिराहियो
दुज्ज मे काउस्मग्गो । जाप अरिहताण भगरताण, नमुका
रेण न पारेमि ताप काय टाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण
नेमिगमि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नरकार का काउस्मग्ग करना
बीछे, प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मवित्थियर जिणे । अरिइत्त
कित्तस्स, चउपीस पि केवली ॥१॥ उमभमनिय च उद,
मभरमभिण्णदण च सुमड च । पउमप्पह सुपाम, निय च
चदप्पहं वड ॥२॥ सुविहिं च पुप्फत्त, सीअल मिज्जम
वामुपुज्ज च । विमलमणत्त च निण, धम्म सतिं च
उदामि ॥३॥ कुबु अर च मल्लि, वड सुणिसुत्तय नमि

नेण च ॥ वदामि रिद्धनेमिं, पास तद् वदुमाण च ॥४॥
 एव मए अभिधुआ, रिद्धयस्यमला पदीणजरमरण । चउ-
 वीस पि जिणपरा, तिथयरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिप-
 वदिय-मडिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुम्मरो
 हिलाभ, ममाट्टिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदसु निम्मलपरा,
 आडधेसु अहिय पयासपरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि समामरणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि-
 थाए मत्थएण उदामि ॥

(समासमण नेकर—)

इच्छाकारण सदिमह भगवन् ! चैत्यवदन यत्नं ?

“इच्छ”

जगचिन्तामणि चैत्यवदन

जगचिन्तामणि जगनाठ, जगगुरु जगरक्खण, जगवधर
 जगमत्थयाद, जगमात्रविश्रुत्तण, अज्ञानयसठविपरूय,
 कम्मठविणासण, चउरीसपि जिणपर जयन्तु, अप्पडिहय-
 सामाण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहि पढममवयणि,
 उरओसय मनरिमय, जिणपराण विहरत लभइ । नर-
 कोडिहिं केवलीण, कौडीमहस्म नर साहु गम्मइ । सपइ
 जिणपर वीस मुणि, रिद्धकोडिहिं धरणाण, समणह कोडी-
 महम दुअ, धुणित्रिय निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयठ सामिय गिम्ह सन्नु त्रि, टाळिद ह्नु नीळीरु,
 जयठ वीर मचउरिमडण, मन्मरुळि सुतिल्लुअ. कुम्ह,
 पाम दुहदरियसडण, अरगविदेरि त्रिल्लुअ, ह्नु ह्नु
 विदिमि ति रु वि तीआणायसपअ अरुं इति अरुं
 ॥३॥ सत्ताणइ सदस्मा, लस्मा ह्नुअ अरुं ह्नुअ
 वत्तिमय कामिअर, तियल्लोण पोर इरु ह्नुअ अरुं
 फोडिमयाडं, कोडि वापाल लस्व अरुअ अरुं अरुं
 अमिह् (असिआड), सागयगिआड अरुअ अरुं

अ किंयि नामवित्त्य, मग्गे अरुं अरुं अरुं
 जाडं निणगिआड, उड सग्गा अरुं अरुं

नम्रत्त्युग् अगिहंवाण भग्दअरुं अरुं अरुं

धेय, ठाण मपत्ताण, नमो निणाण, निश्रभयाण ॥८॥
जे अ थइया मिद्धा, जे अ भविस्मतिणाम् काले ।
सपइथ वइमाणा, मये तिरिहण वटामि ॥९॥

जावति चेइआइ, उइडेय अहे थ तिरिअ लोए थ ।
सगाइ ताइ उडे, इह मतो तत्य सताइ ॥१॥

इच्छामि समामणो वटिउ जावणिज्जाण निमाहि
आए मत्तण्ण उदामि ॥

जावत कवि साट, भरहणय महाविडेह थ । सवमि
तेमि पणयो, तिरिहेण निदड विग्याए ॥१॥

नमोऽर्हत्तिग्घाचायापाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

उपसग्गहर पाम, पाम वदामि कम्मघणमुव । विसहर-
विसनिन्नाम, मगलउद्वाण आगस ॥१॥ विसहर पुलिगमत,
कठ घारेइ जो सया मणुयो । तस्म गहरोगमारी, दुइतरा
जति उपसाम ॥२॥ चिड्डुउ दूर मतो, तुज्जक पणामो वि
बहुफलो होइ । नरतिरिण्णु वि जीया, पावति न दुक्खदोगच्च
॥३॥ तुह सम्मत्ते लडे, चितामणिरुप्पपायणभहिए ।
पावति अविग्घेण, जीया अयरामर टाण ॥४॥ इय सवुयो
महायम, मत्तिम्भरनिभरण हियण्ण । ता टर दिज्जवोदि,
मवे भव पामनिण्णचट ॥५॥

(अत्र दोनों हाथ जोड़कर जय श्रीभरराय कहना)

जय श्रीभरराय ! जगगुरु !, हीउ मम तुह पमारओ

मय्य ! भवतिरेवो मग्गाणुसाग्घिया इट्टफलमिद्धि ॥१॥
 लोमनिद्रुच्चाओ, गुन्नणपूथा परत्थकरणं च । मुहगुरुनोणो
 तत्रयणसेवणा आमयमसुडा ॥२॥ वारिज्जडं जडं वि
 निआणं वधणं वीअणयं तुहं समए । तहं वि ममं हुज्ज
 सेगं, मवे मवे तुम्हं चत्तयाणं ॥३॥ दुक्खसुओ वम्मसुओ,
 समाहिमग्गं च बोहिलाभो अ । मपज्जउं महएअं, तुहंताड
 पणामं नरणेणं ॥४॥ गर्ममगलमागल्यं, सर्वंरल्याणं कारणं ।
 प्रधानं गर्मधर्माणां जैनं जपति शामनं ॥५॥

इच्छामि स्वमासमणो वदिठ जावणिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएणं उदामि ? इच्छाकरेणं मग्गिहं भगवन् ! मज्जाय
 वरुं ?" 'इच्छ'

(एकं नमस्कारं नीचे मुनय गिनना)

नमो अग्गिहताणं । नमो मिट्ठाणं । नमो आयरियाणं ।
 नमो उरज्जायाणं । नमो लोए मयमाणं । एमो पचं नमु
 वारो । मयपायप्पणामणो । मगलाणं च सत्वेमिं पडमं
 हउं मगलं ॥१॥

फिर मत्रहं त्रिणाणं सज्जायं तिमन् प्रकारं से कहना—

अथ मत्रहं त्रिणाणं सज्जायं ।

मत्रहं त्रिणाणमाणं, मिच्छं परिहरहं धरहं सम्पत्तं ।
 छरिहं आवस्मयम्मि, उज्जुत्तो हों पणियमं ॥ १ ॥
 पवेमु पोमहयं, दाणं सीलं तपो यं भवो अ ।

सज्जाय नमुकारो, पगेयारो थ जयणा. अ ॥ २ ॥
 जिणपूया जिणपुण्ण, गुहपुय साहम्मियाण वच्छल्ल ।
 वपहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
 उवसम विवेग सवर, भासात्तमिई छजीर कस्सणा य ।
 घम्मिअजणसत्तगो करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
 सघोररि रहुमाणो, पुत्थयल्लिहण्य पभायणा निच्च ।
 सड्ढाय किच्चमेश, निच्च सुगुरुरएमेण ॥ ५ ॥ इति ॥

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणयिज्जाए निमीहिआए
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पच्चस्साण
 सुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(ऐसा कहकर सुहपत्ति पडिलेहना—पीछे समासमण नेत्र—)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणयिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
 पच्चस्साण पारं ? 'पथागङ्गि'

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणयिज्जाए निमीहि-
 आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
 पच्चस्साण पारा "तड्ढत्ति"

(जेमे कहकर दाहिने हाथको चरवल पर रखकर मस्तक
 मुक्ताकर एक नजर मंत्र गिनकर जो पच्चस्साण किया हो उस
 नाम से कह इस माणिक पारना—)

उग्गए सर नमुकारमहिय पोरिमि माहपोरिमि

पुरिमड्ड गटिमहिय मुट्टिसहिय पचमत्ताण क्रिया चउ-
 ण्हिह आहार, आयविल निवि एकासना क्रिया तिण्हि
 आहार, पचमत्ताण फामिय पालिअ मोहिय तीरिय क्रिडिय
 आराहिय ज च न आराहिय तस्म मिच्छामि दूक्क ।

(एक नवकार गिनना अंगर सिबिहार उपवास हो तो उसे नीचे माफिक बोलना—)

सूरे उग्गए उपवाम क्रिया तिण्हिआहार पोरिमि
 साढपोरिमि पुरिमड्ड मुट्टिमहिय पचमत्ताण क्रिया, फामिय
 पालिअ सोहिय तीरिय क्रिडिय आराहिय ज च न
 आराहिय तम्म मिच्छामि दूक्क ।

एक नवकार गिनना चउ-बिहार उपवास बाले को पचमत्ताण पारने की जरूरत नहीं होती ।

पोपय म एगामण रुने की विधि ।

पचमत्ताण पारने के बाद पानी पीना हो तो मांगा हुआ अचित्त जल बैठने पर बैठकर पीना और जिस बरतन से पानी पिया हो उसको घूँटकर रखना । पानी के बरतन को उधाहा नहीं रखना । आयविल, नीधी, या एगासणा करने अपने घर जाना हो तो हरियासमिति सोधते (पानी रास्त में जीवजंतु देखते हुये) जाना और घर में प्रवेश करते 'जयणा मगल' शब्द बोलना और बैठना (आसन) निद्धा बैठकर, स्थापना स्थापन कर "हरियावहि पडिक्कम" कर गमाममण देकर "गमणा गमणे" आलोयनी, और काना लहर पाटिया, धाली बगौरा बरतन च

मृत् पृथ्वी कर (प्रमार्जन कर) हो सके जब तक मुनि महाराज को घोहरा कर निश्चल (स्थिर) आमन से मौन रम्य आहार करना, श्रेष्ठा नहीं डालना और थाली धोकर पीना, बगैर कारण स्वादिष्ट आहार और लक्षिणादि ताबुल (मुग्घास) न लाना और मुग्घ शुद्ध कर दिवस चरिम विविहार का पश्चक्राण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार उपर लिखि त्रिधि से पौषधशाला म ही करे और फिर बाद पौषधशाला में आकर "इरियासहि पडिक्म" कर (सो पावड ह्य तो गमणागमणे आलोय कर) पुन जगधितामणि का चैत्वघदन जयवीरराय तक करना ।

पौषध म पेशान (मात्रा या स्थडिल) जाने की विधि ।

पेशान व पाखाने जान के वक्त पहनने का धोती पहनना, कामली का काल हो तो सिर व कान पर कामली ओरनी, मुहपत्ति कदोरे में रखनी, चरबला डारा वगन में रखना, रात का वक्त हो तो नडासन में इरियासमिति सोधते चलना । पेशान करना हो तो कृ डी पूजनर उसम पेशाव कर परठवन (पेशान जमीन पर डालन) की वगह कृ डी रखनी, निर्वाध वगह देय "अणुजाणह जस्सुगो" कह कर पेशान जमीन पर डालना, फिर कृ डी नीचे रख तीन दफे "बोसिरे" कहना और कृ डी अचित्त जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना ।

पाखाने जाना हो तो निर्वाध वगह देय "अणुजाणह

जस्मुगो" बहकर पायाने जाना और शुद्धि करके तीन दफ 'बोसिरे' कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पायाने की शफा दिनही को निवारण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पायाने जाने में जीय जतु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पड़े तो १०० हाथ जगह के अंदर जाना, धोती बदलने बाद दरियावहि पहिष्मना ।

मिर्क रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि ।

रात्रि के चार पहर का पौषध लेने वाला जो पहिलेहण और नेववदन की क्रिया दिन म ही करने की है तिसमे पौषध जल्दी शुरु करना चाहिये । उसकी विधि इसी पुस्तक के प्रष्ट ६ वें मे आरम्भ होकर प्रष्ट १५ की ३ पक्ति तक (बहुबेल करेमि ? "इच्छ" तक) लिया है उसने अनुमार कर के बाद में शाम के पहिलेहण में इच्छामि० समासमण देकर "पहिलेहण कर १ इच्छ" से शुरु कर । उसकी विधि इसी पुस्तक म आगे "पिछले पहर को पहिलेहण करने की विधि" म है, उसके अनु-सार करें ।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—

आठ पहर का पौषध लेने की विधि ।

पिछले पहर को पहिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोचकर, फिर इसी पुस्तक के प्रष्ट १० की ७ वी पंक्ति से आरम्भ होकर प्रष्ट १५ की ३ पंक्ति तक (बहुबेल करेमि ? "इच्छ" तक) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु—सम्नाय

करू" की जगह "सन्ध्याय म हूँ" कहना और तीन नयकए की जगह (नववार गिनता । फिर ध्यान में शाम के पहिलेहण में "इच्छामि० समासमण्य दकर "पडिलेहण करू ? "इच्छ" में शुरु करे । उसका विधि इसी पुस्तक में आया "पिजले पहर के पहिलेहण करने की विधि म ८ । उसका अनुसार करे ।

पिजले पहर में पडिलेहण करने की विधि ।

(मुनिरात्र न स्थापनाचार्य की पहिलेहण की हो उमरे सामने छ घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना स्थापना-चार्य की पहिलेहण क्रिय पहिले पडिलेहण नहीं होती ।

इच्छामि समासमण्यो वदित जायणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ उच्छाकारण सदिमह भगवन् !
वहुपडिपुएणा पोसिमी ? "इच्छ"

(पुन समासमण्य केर इसी पुस्तक के प्रश्न ३७ के १८ वई पक्ति में प्रारम्भ करने प्रश्न २० की पक्ति तक ("गमणामण्ये" आलोचन कर) दिया है उसका अनुसार क्रिया करें । पीछे —

इच्छामि समासमण्यो वदित जायणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सदिमह भगवन् !
पडिलेहण करू ? "इच्छ"

इच्छामि समासमण्यो वदित जायणिज्जाण निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सदिमह भगवन् !
पोपधशाला प्रभाजू ? "इच्छ"

(वह उपवास बाल को मुहपत्ति, चरपला, आसन, पडिलेहना और ण्कासणांि करने बाल को कदोर (सूत को लागडी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके समा समण देकर इरियाग्रहि पडिहम करके)

इच्छामि त्वमासमणो वट्टिउ जाणणिज्जाण निमीहिआण मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाफारेण सदिमह भगवन् । पमाय री पडिलेहणा पडिलेहागीजी ? “इच्छ”

एसा कहकर ब्रह्मचर्ये श्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की पडिलेहना कर । पीछे

इच्छामि त्वमासमणो वट्टिउ जाणणिज्जाण निमीहिआण मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाफारेण सदिमह भगवन् । उपधि मुहपत्ति पडिलेहँ ? “इच्छ”

एमे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे

इच्छामि त्वमासमणो वट्टिउ जाणणिज्जाण निमीहिआण मत्थएण वंदामि ? इच्छाकरेण सदिमह भगवन् ! सज्जाय करँ ? ” “इच्छ”

एन नयकार पढकर “मत्रह निशाणु’ की सज्जाय उरदु बैठ (एड घुटन बैठ) कर कहना ।

नमो अग्निहाण । नमो मिट्ठाण । नमो आयरियाण ।

नमो उवज्झायाण । नमो लोण मग्गसाहण । एसो पच नमु-
 धारो । सच्चपात्रप्पणासणो । भगलाण च सच्चेमि पडम
 हवह भगल ॥१॥

अथ मन्नह जिणाण सज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह मम्मत्त ।
 छन्निह आणस्मयम्मि, उज्जुत्तो होऽ पइदिवस ॥ १ ॥
 पवेसु पोसहनय, दाण सील तरो अ भावो अ ।
 सज्जाय नमुकारो, परोयारो अ जपणा अ ॥ २ ॥
 जिणपूया जिणधुणुण, गुरुधुय साहम्मिआण वच्छेत्त ।
 वण्हारस्म य सुद्धी, रहजत्ता तित्थत्ता य ॥ ३ ॥
 उवसम विवेग सवर, भामाममिई छजीव करुणा य ।
 धम्मियज्जणससम्मो, कएणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
 मघोपरि न्हमाणो, पुत्थयलिहण पमारणा तित्थे ।
 सड्ढाण किच्चमेग, निव गुगुब्बएसेण ॥ ५ ॥इति॥

(फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्त्त बढ़ना देवे, ईस
 पुस्तक के पृष्ठ २४ की १५ वीं पक्ति में प्रारम्भ होकर पृष्ठ २५
 की १६ पक्ति तक किया है उसके अनुसार कर । और तिविहाण
 उपवास वाला सिर्फ रामासमण दे)

इच्छामि एमाममणो उदिउ जाणयिज्जाण निसीहि-
 आण मत्थणस्स वटामि ? इच्छाकारण सदिसह भगवन् !
 एमायकरी पच्चन्नाण का आदेश दीनियेती ।

ऐसा कहकर पाणहार का पञ्चस्त्राय कर । १२

पाणहार-पञ्चस्त्राय

पाणहार दिवसपरिम पञ्चस्त्राइ । अन्नयणामोगेण,
सहभागारेण, अदत्तरागारेण, सञ्चममाहिनत्तियागारेण
चोसिरइ ।

इच्छामि गुमासमणो वंदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-
त्थाए मत्थण्ण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
उपधि सदिसाहुँ ? “इच्छ” । इच्छामि गुमासमणो वदिउ
जाणणिज्जाए निमीहित्थाए मत्थण्ण वदामि ॥ इच्छाकारण
सदिसह भगवन् ! उपधि पटिलेहुँ ? “इच्छ”

कहकर प्रथम पहिलहन से घाड़ी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट)
मात्रा (पेशाव) करने जाने का वस्त्र और रात्रि-पौषव करना हो
तो सथारिया, कमल वगैरह वस्त्र पहिलहे । पीछे हंटासण
लेकर पहिलेहण करने फिर गुमासमण देकर इरियावाहि पडिक्कम
करक बुडा कचरा निकाल उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ
१७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ वीं

छिन्नविहार-उपवास निया हो तो इस वक्त पञ्चस्त्राय
करने की जरूरत नहीं है, परंतु सुवह तिविहार का पञ्चस्त्राय
रुिया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चण्डिविहार-उपवास
का पञ्चस्त्राय करे । उसका पञ्चस्त्राय इस पुस्तक के पृष्ठ ३०
में दिया है ।

पक्ति तत्र दिव्या है उसके अनुसार करें । पीछे देवर्ष्यन
करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस समय भी
सम्भव है । जिसने आठ पहर का पोसाह लिया हो या
जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देवर्ष्यन करके पीछे
कुण्डल (जान में डालने के लिये रुई), हंडासन और रात्रि की
शुचि के लिए घूना डाला हुआ अथवा पानी याचना करके
लेवे । पीछे—

इच्छामि समामगणो यदिउ जात्रिज्जाण निर्माहि-
आण मत्तण्ण वदामि ॥

इच्छामरेण मदिमह भगरन् । इत्थिपण्हिय पटिक्-
मामि । इच्छ इच्छामि पडिक्किऊ, हरियावदियाण, विगह-
णाए, गमणागमणे, पाण्डमणे, वीयवमणे, हरियवमणे,
ओमा उक्तिग-पणम दग-मही मक्कडागताणा सरमणे, जे
म जीमा निराहिया एगिदिया वडदिया, तेददिया, चउरि-
दिया, पचिदिया, अमिहया वत्तिया, लेमिया, सघाइया,
मघट्टिया, परियात्रिया, मिलामिया, उद्विया, टाणाओठाणं
समाविया, जीवियाओ ववणेविया तस्स मिच्छामि दुयट ।

तस्स उत्तरीरुण्णेण, पायच्छित्तकरण्ण विगोहिक्करण्णेण,
विमल्लीकरण्णेण, पायाण वम्माण निचायणहाण, टामि
राउम्माग ॥

अचत्थ ऊससिएण, नीगसिएण, खामिण्णं, धीएण,
ऊमाइएण, उडुएण, वायनिमग्गेण, भमलिण पित्तमुच्छ्राए,

मुहुमेहि अगम गालेहि, मुहुमेहि खेलमचालेहि, मुहुमेहि
दिदिसचालेहि, एरमाइएहि आगारेहि भभगो भपिराहियो
हुज्ज मे काउस्मगो । जाउ अरिहताण भगवताण, नमुवा-
रण न पारमि ताउ काय टायेण मोयेण भाणेण अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहा ण्ठ लोगस्स का या चार नपकार का फाण्स्सग करना
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगर, धम्मवित्थपरे निण्णे । अग्गिहते
क्किट्ठम्म, चउपीम पि केवली ॥१॥ उमममज्जिअ च उद,
सभवमभिण्णदण च मुमड च । पठमप्पह मुपास, निण च
चटप्पह वट ॥२॥ मुग्गिहि च पुप्फटत, सीअल मिज्जम
वामुपुज्ज च । विमलमणन च जिण, धम्म संति च
वदामि ॥३॥ दृउ अर च मज्झि, वट मुण्णिमुअय नमि-
निण च ॥ वदामि रिट्ठनेमि, पाम तइ उदभाण च ॥४॥
एउ मण अभिबुआ, विट्ठययमला पदीणजरमग्गणा । चउ
वीस पि निण्णवरा, विअयरा मे पणीयतु ॥५॥ कित्तिव-
वण्णिय-महिया, जे ण लोगस्स उत्तमा मिट्ठा । आरग्गरो
हिलाम, समाहिवग्गमुत्तम दिंतु ॥६॥ चटसु निम्मलयर,
आइअेसु अहिय पयासयर । मागरवरगमीरा, मिट्ठा सिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि गमामन्तो रटिडं जायण्डनाए निर्मीहि-
 आए मत्थण्ण रंटापि ॥ इच्छाकारेण सदिमह मगवन !
 थडिल पडिल्लेहे ? "इच्छा"

गमा कह्कट नीचे लिखे अनुमात् धात्रीस मडल करे ।

ये मडल रानि म वड़ी नाति लघुनीति । पायाना, पेशाव)
 वगैय परठवने लायक जगत्प्रेयत (प्रति लेखन करने) के लिये है,

- १ आघाडे आसन्ने उचार पासरणे अण्हियासे ।
- २ आघाडे आसन्ने पामरणे अण्हियासे ।
- ३ आघाड मज्जे उचार पासरणे अण्हियासे ।
- ४ आघाड मज्जे पामरणे अण्हियासे ।
- ५ आघाडे दूरे उचार पासरणे अण्हियासे ।
- ६ आघाडे दूरे पामरणे अण्हियासे ।

सधार के पास की जगह इस माफिक छ मडल करना —

- १ आघाडे आसने उचार पामरणे अण्हियासे ।
- २ आघाड आसने पामरणे अण्हियासे ।
- ३ आघाडे मज्जे उचार पामरणे अण्हियासे ।
- ४ आघाड मज्जे पामरणे अण्हियासे ।
- ५ आघाड दूर उचार पामरणे अण्हियासे ।
- ६ आघाडे दूरे पामरणे अण्हियासे ।

उपासर के कारन के अदर की तरफ इस माफिक छ मडल करना —

- १ अण्णाघाडे आसने उचार पासरणे अण्हियासे ।
- २ अण्णाघाड आसने पामरणे अण्हियासे ।

- ३ अणाघाडे मज्जे उचारे पामरणे अणहिआसे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पासरणे अणहिआसे ।
- ५ अणाघाडे दूर उचारे पासरणे अणहिआसे ।
- ६ अणाघाडे दूर पामरणे अणहिआसे ।

उपाश्रय के चारने के बाद न नदीक रहकर छ मंडल करना —

- १ अणाघाडे आसन्ने उचारे पासरणे अहिआसे ।
- २ अणाघाडे आसन्ने पामरणे अहिआसे ।
- ३ अणाघाडे मज्जे उचारे पासरणे अहिआसे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पामरणे अहिआसे ।
- ५ अणाघाडे दूरे उचारे पामरणे अहिआसे ।
- ६ अणाघाडे दूरे पामरणे अहिआसे ।

उपाश्रय से सौ हाथ के अदान दूर रहकर छ मंडल करना —

इन मंडलों वाली जगह पहले से ही देव्य ररानी और मंडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर टट्टी का उपयोग (ध्यान) रखना ।

२४ मंडल करने के बाद श्रियावहि पढिक्रम पर चैत्यवन्दन के साथ देवसी या पात्त्रिकादि (पम्बा वगैरा) प्रतिक्रमण करे ।

सथारा पोरिसी पढ़ाने की विधि

यदि रात्रि-पौषध हो तो पढिक्रमण करने के बाद सथारा पोरिसी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-चर्चा वगैरह करे । पीछे

इच्छामि एवामपण्णो वंदिउ जाणणिज्जाए निर्मादि-
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिमह भगवन् !
बहुपडिपुएणा पोरिमी ? तइत्ति;

इच्छामि एवामपण्णो वदिउं जाणणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! इरियाण्हियं पडिक्क-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्कमिऊ, इरियाण्हियाए, पिराह-
णाए, समणागमणे, पाणवमणे, वीयवमणे, हरियवमणे,
थोसा उतिंग-पण्ण-दग-मट्टी-मवटामताणा मरुमणे, जे
मे जीवा पिराहिया एगिदिया बइदिया, तेइदिया, धउरि-
दिया, पचिदिया, अभिहिया यत्तिया, लेमिया, सपाइया,
सघट्टिया, परियाणिया, विलामिया, उदविया, ठाणाथोटाए
सकामिया, जीणियाओ वणोणिया तस्म मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायाच्छित्तकरणेण निसीहिरणेण,
निसल्लीकरणेण, पायाए कम्माण निग्घाणण्डाए, ठामि
काउस्मग्ग ॥

अन्नत्थ उममिण्ण, नीमसिण्ण, रासिण्ण, छीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमन्निए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, प्वमाइएहिं आगारहिं अभम्मो अपिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मग्गो । जाण धरिइताए भगवताए, नमुक्क-

रेण न पारेमि ताम ज्ञाय ठाणेण मोणेण, भाणेण अप्पाण
 बोमिगामि ।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउम्सग करना
 पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लौगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरिहंते
 कित्तइस्स, चउरीम पि वैवली ॥१॥ उमभमजिअ च वद,
 समरमभिणदण, च सुमइ च । एउमप्यइ सुपाम, जिण च
 चदप्पह वट ॥२॥ सुणिहि च पुप्फत्त, मीअल-सिज्जस
 वामुपुज्ज च । निमलमणत्त च जिण, धम्म सत्ति च
 वदामि ॥३॥ कुधु अर च मत्ति, वद सुणिसुअय नमि-
 जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमि, पास तइ वदुमाण च ॥४॥
 एव मए अमिदुआ, विहुययमला पहीणरमग्गा । चउ-
 वीस पि जिणपरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्थिय-
 वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आहग्गो
 हिलाम, समाहिवरमुत्तम दित्तु ॥६॥ चंटेसु निम्मलयरा,
 आइशेसु अहिय पयासयरा । नागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि एमाममणो वदिउ जाणणिज्जाण निसीहि-
 आए मत्तएण वदामि ॥ इच्छामारेण सदिसइ भगवन् !
 , चहुपडिपुएणा पोरिसी, राइयसथारण ठामि ? "इच्छ"

ये कहपर चउकसाय का चैत्यचन्दन करें—

चउकमायपडिमन्तुल्लूरण, दुज्जपमयणवाणमुसु-
मूरण । सरसपिअगुवन्नु गपगामिउ, जयउ पासु भुवण
त्तपसामिउ ॥१॥ जसु तणुक्कतिरुडप्प सिण्णिद्वउ, सोहइ
फणिमपिक्किरणा लिद्वउ, न नवजलहरतडिद्वयलच्छिउ, सो
जिणु पासु पयच्छउ वच्छिउ ॥२॥

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥ १ ॥ आइगराण,
तित्थयराण, सयसमुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण,
पुरिसवरपुडरीआण, पुरिसवरगघहत्थीण ॥३॥ लोमुत्तमाण,
लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईयाण, लोगपज्जोअग-
राण ॥ ४ ॥ अमयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,
सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआण,
धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मपरचाउरतचक्खुद्वीण
॥६॥ अप्पडिहयपरनाणटसणधराण, विअइल्लउमाण ॥७॥
जिणाण जाययाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण,
मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सत्त्वन्नु सत्त्वदरिसीणं, सिउमय-
लमरुअमणत्तमनस्यमब्बावाइमपुणरापित्ति, सिद्धिगइनाम-
धेय, ठाण सपत्ताण, नमो निणाण, तिअमयाण ॥९॥
जे अ अइआ सिद्धा, जे अ मणिससतिणागए काले ।
सपइअ वट्टमाणा, सत्त्वे तिण्णिहेण वदामि ॥१०॥

जाउरति चेइआड, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सत्त्वाड ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि सुमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

जायत केवि माहू, मरहेरवय महाविदेहे थ । सत्थेमि
तेमि पण्णओ, तिपिहेण तिदइ विरपाण ॥१॥

नमोऽर्हत्तिट्ठाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

उपसगइर पाम, पाम वंदामि कम्मघणमुक्क । विसहर-
विसनिनास, मगलरुद्धाण-थावासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमत,
वठे धारेड जो सपा मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्टजरा
वति उवमान ॥२॥ चिट्टउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि
चहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावति न दुक्खदोगघं
॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चित्तमणिरुप्पपायवम्महिए ।
पावति अण्णियेण, जीना अयरामर ठाण ॥४॥ इय सधुओ
महायस, भत्तिन्मरनिम्मरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहिं,
भवे भवे पामजिणचद ॥५॥

(अथ दोनों हाथ जोडकर जय वीधराय कहना)

जय वीधराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमारओ
भयव ! भवनि-वेओ मग्गाणुमारिआ इट्टफलमिद्धि ॥१॥
लोगरिरुद्धाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरण च । सुहगुरुनोगो
तत्त्वयणसेवणा आमवमखडा ॥२॥ धारिज्जइ जइ वि
निआण उधणं वीधराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
सेरा, भवे भवे तुम्ह चलाण ॥३॥ दुक्खखथो कम्मखथो,

समाहिमरुणं च बोदिलामो अ । सपञ्जउ महणअ, तुहनाह
पणाम फरणेण ॥४॥ सर्वमगलमागन्ध, सर्वकल्याणकारणम् ।

प्रधान सर्वधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि सुमागमणो वदिउ जारणिज्जाण निमीदिघाण
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारण सदिग्द भगवत् । राउप-
सथारा एत पढने क निमित्त मुहवनि पटिलेहुँ ? "इच्छ"

एसा कहकर मुत्पत्ति पत्तिलेहण कर संधारण पोरिसि का पाठ पढे ।
निमीदि, निमीहि, निर्मीदि, नमो सुमागमणाण गोप
माईण महामुणीण ।

नमो अरिहताण । नमो मिद्धारण । नमो आयरियाण ।

नमो उरज्झायाण । नमो लोण मन्माहण । एमो पच नमु
धारो । मन्वपाउप्पणामणो । मगलारणं च मन्नेमि पडमं
इवद मगल ॥१॥

करेमि भते ! मामाडय, मावज्ज जोग पचकएामि । जार
पोसद पञ्चुरामामि, दुविद तिनिहण मणेण धायाण
काएण न करेमि न कारवेमि तस्स भते ! पडिक्कामामि
निंदामि गरिहामि अप्पाएण वोमिरामि ॥

(अनुक्रम से चे तीना पाठ तीन दफ योलना ।)
अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुण ! गुण्युणस्यणेहि मंडियसरीरा ।
बहुपडिपुंजा पोगिमि, राइयसथारण टादि ॥

अणुत्राणह सधर, नाह्रदाणेया धामपासेण ।
वृक्षुन्पिपायप्यारण, अतरत पमज्जण भूमिं ॥ ३ ॥
गमोइथ मढाया, उन्नइते अ कायपडिलेहा ।
दयाउवयोग उगामनिरुमणानोए ॥ ३ ॥
जइ मे ह्रुज्ज पमाथो, इमस्म दइम्मिभाड रयणीण ।
आणमुगहिदइ, मअ त्रिपिहण वोमिरिथ ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, मिद्धा मगल,
साहमगल, केवलिपन्नतो धम्मो मगल ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहता लोगुत्तमा, मिद्धा लोगुत्तमा,
साह लोगुत्तमा, केवलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि मरण परज्जामि—अरिहते मरण परज्जामि,
मिद्धे मरण परज्जामि, साह मरण परज्जामि, केवलीपन्नत
धम्म मरण परज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाप्रायमलिथ, चोग्कि मेहूय टरिणमुच्छं ।
जोइ माण माय, लोह पिज्ज तहा दोम ॥ ८ ॥
कलइ अन्मस्पाणं, पेमुअ रइ-अरइ-ममाउत्त ।
परपरियाय माया-मोम मिच्छत्तसद्ध च ॥ ९ ॥
वोमिरसु इमाड मुक्खमग्गमग्गविग्गभूयाड ।
दुग्गइनिअधणाड, अट्टाग्म पायटाणाड ॥ १० ॥
एगोऽह नत्थि मे जोइ, नाहमन्नस्म कम्मइ ।
एवं अदील्लमणमो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ११ ॥

एगो मे सामथ्रो अप्पा, नाणदसणसजुओ ।
 सेसा मे बाहिरा भाया, सन्ने सजोगलकण्णा ॥१२॥
 सजोगमूला जीवण, पत्ता दुक्खसणंपणे ।
 तम्हा सजोगसवध, सन्न तिविहेण वोसिरिअ ॥१३॥
 अरिद्धतो मम देणे, जाणज्जीव सुमाहुणो गुण्णो ।
 निनपन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिअ ॥१४॥

(यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गुण कर नीचे की तीन गाथा कहे)

खमिअ समाविअ मड एमह, सवह जीरनिहाय ।
 सिद्धह माए आलोयणह, मुज्झह रहर न भाव ॥१५॥
 सध्वे जीण कम्मवस, चउदहराज भमत ।
 ते मे सन्न समाविआ, मुज्झयि तेह एमत ॥१६॥
 ज ज मणेण वद्ध, जं ज वाएण भासियं पाय ।
 ज ज कायेण कय, तस्स मिच्छामि दूक्खड ॥१७॥इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के बाद जब तक निद्रा न आवे तब तक स्वाध्याय ध्यान करे, संघारा दूसरे आवक के संघारे से कम से कम एक बत छेटी (एक विलात दूर) विछाना । बाद में रात्रि के आगरी प्रहर में उठकर राई प्रतिव्रमण करना और सुबह स्थापनाचार्य जी का पढिलेहण और इरियावहि करने के बाद घरत आदि का पढिलेहण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १५ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ वीं पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । बाद देवबदन, सगमाय

करें रह पु वरु म आगे दिया हुआ है । न्ये दर्शन, गुरु वंदन
वरु म ग हुवे डडामण, कु डी, पानी चगौरा गृहस्थ को चा।पस
सभलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना ।

याठ पहर क तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि ।

इच्छामि सुमाममणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि-
थाए मत्थएण चदामि ॥

इच्छामारेण मदिमह भगवन् ! इरियाणहिय पडिक्
मामि । इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊं, इरियाणहियाए, निराह
णाए, गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,
ओमा उतिग-पणग-दग-मड्डी-मकडासताणा सकमणे, जे
मे जीवा निराहिया एमिदिया बे.दिया, तेडदिया, चउरि
दिया, पचिदिया, अभिहया उत्तिवा, लेमिया, सघाइया,
मघट्टिया परियाणिया, मिलामिया, उद्विया, ठाणाओठाण
सकामिया, जीणियाओ वरणेणिया तस्म मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पापच्छित्तकरणेण विमोहिक्करणेण,
विसल्लीकरणेण, पारणं, कम्मण निग्घायणइए, ठामि
काउस्सम ॥

अन्नत्थ उममिएण, नीसमिएण, खासिएणं, छीएणं,
जमाइएण, उहुएण, नायनिसमणेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अगमचालेहिं, सुहुमेहिं, वेलसचालेहिं, सुहुमेहिं
त्रिभुजालेहिं तानवाण्यदि

हृज्ज मे काउस्तग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुका
रेण न पारेमि ताव काय टाखेणं मोखेण भाखेण अण्णाय
वोमिगामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नमकार वा काउस्तग्ग करना
पीछ प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुमोार)

लोगस्स उज्जोअगरं, धम्मवित्थयरे जिणे । अरिहते
किणइस्स, चउरीस पि केउली ॥१॥ उअममज्जिय च वदे,
समयमभिणदण च सुमई च । पउमण्णइ सुपास, जिणे च
चदण्णइ वंदे ॥२॥ सुनिहिं च पुण्णदत्त, मीअल-मिज्जस
वासुपुज्ज च । रिमलमणत्तं च जिण, धम्म सत्तिं च
वदामि ॥३॥ कुवु अर च मत्ति, वटे मुणिसुअवय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पास तह चट्ठमाण च ॥४॥
एव मए अभिधुआ, विहुयण्यमत्ता पहीणअरमरणा । चउ-
वीम पि जिणवरा, तिअयरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिव-
वदिय-मडिया, जे ए लोगस्स उअमा सिद्धा । आरग्यवो
हिलाभ, समाहिअरमुत्तम द्वित्तु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइअेसु अदिय पयानयरा । सागरवसगाभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

इअामि समासमणो वदिठ तावणिज्जाए निसीहि-
आण मत्थएण वंदामि ॥ इअाकारेण सदिसह भगवन् !

अहपत्ति पडिल्लेहुं ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पहिलेहना-पीछे समासमण देना-)

इच्छामि समासमणो यदिउ ज्ञारणिज्जाए निमीहि-
आए मत्यएण वदामि ॥ इच्छामारेण मदिसह भगवन् !
पोसह पारमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि समासमणो यदिउ ज्ञारणिज्जाए निमीहि-
आए मत्यएण वदामि ? इच्छामारेण मदिसह भगवन् !
पोसह पारिय 'तहत्ति'

(कहकर दाहिने हाथको चरवल पर रखकर मस्तक मुकारर
एक नवकार मग्न बोल फिर "सागर चदो" की पोषध पारने की
गाथा कहे —

नमो अग्निताए । नमो मिद्धाए । नमो आपरियाए ।
नमो उवज्झायाए । नमो लोए सवमाहूए । एसो पच
नमुकारो । सत्र पावप्पणामणो । मगलाए च मवेसि ।
पढम हउड मगल ॥

"मागर चन्दो कामो, चन्दवडिसो सुटसणो घन्नो ।

जेमि पोसह पडिमा, अरुडिआ जीवियते पि ॥१॥

घन्ना सलाहणिज्जा, मुलसा आणद कामदेवा य ।

जाम पसस भयव, दद्व्ययत्त महावीरो ॥२॥

पोसह विधि मे लिया विधि से पारा विधि करने जो कोई
अविधि हुई हो वह सब मन धचन काया करके
मिच्छामि दुकई।

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि
थाण मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(एतं कृत्वा मुहपत्ति पडिलेहना—वीक्षे समासमण देता—)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-
थाण मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
सामायिथ पारेमि ? 'पयाशक्ति'

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-
थाए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
सामायिथ पारिय 'तहत्ति'

(एतं कृत्वा गृहिणे हाथ को चरखल पर रखकर महाक
मुनाकर एव नरकार मंत्र पढ़कर 'सामायिथयजुतो'
सूत्र पढ़े)—

नमो अरिस्ताय । नमो सिद्धाय । नमो आयगियाय ।
नमो उज्जभायाय । नमो लोए मच्च साहए । एसो पच
नमुवारो । सच्च पावप्पणासणो । मगलाय च मग्गेमि ।
पडम हवइ मगल ॥

सामायिथयजुतो, जाण मणे होई नियमजुतो ।
दिन अमुह रुम्म, सामाडयजत्तिया धारा ॥१॥ सामाड-
यमि उ रुए, समणो इव सामथो हवइ जम्हा । एएण
पहुमो सामाडय कुज्जा ॥२॥

मन सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण क्रिया,
विधिम जो मोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुःख ।

दस मनके, दस रचनके, रागद्वे काया के ये कुल बत्तीस
दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुःख ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवमी या पाञ्चशान्ति (पक्करी बगैरा) प्रतिक्रमण करने के
बाद पौषध पारने के पहिले मागे हुए बडासण कु डी, पानी बगैरा
गृहस्थ को वापिस सभलगा देना पीछे खमासमण देकर
हरियागृह करके चउकसाय चैत्यचल्न करे, उसकी विधि
इसी पुस्तक के पृष्ठ २८ की ४ थी पक्ति से आरम्भ होकर
पृष्ठ ६० की ३ री पक्ति तक (जैन जयन्ति शासनम् ॥१॥ तक)
दिया है उसने अनुसार करें । बाद में खमासमण देकर पौषध
पारने की मुहपत्ति पहिलेहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के
पृष्ठ ६६ की १६ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी
पक्ति तक दिया है उसके अनुसार पारें ।

❀ इति पौषध विधि समाप्त ❀





ॐ श्री वीतरागाय नमः ॐ

❀ त्रिकाल-देववन्दन विधि ❀

(अथ देववन्दन)

देववन्दन करने वाला धारक धार्मिका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोट) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नव कारवाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन बिछाकर, चर घला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहताय । नमो सिद्धाय । नमो आयरियाय ।
नमो उपजम्भायाय । नमो लोए मन्वसाह्वय । एसो पच
नमुकारो । सन्वपावप्पणासणो । मगलाय च सवेमि पढम
हउइ मगल ॥१॥

पचिदियसवरणो, तह नवनिहवभचेरगुत्तिधरो । चउ-
निहकसायमुको, इथ अट्टारम गुणेहि सजुतो ॥१॥ पच मह-

व्ययनुतो पचपिहापारपालणसमथो । पचममिथो त्रिगुतो,
छत्तीमगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिदिय बहे, यदि प्रथम स उस स्थान पर आचार्य
प्रमुग्ग को स्थापना की हुई हो तो वहा पंचिदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि समामणो वदिउं ज्ञानिज्जाए निमीहि-
आए मत्थएण वदामि ॥

इच्छामारेण संदिमह भगवन् ! इरियाणदिय पडिक्-
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिउं, इरियाणहियाण, विउ-
णाए, गमणागमणे, पाणवमणे, धीपक्कमणे, हगियक्क-
ओसा । उरिग-पणग-उग-भट्टी मक्कडामताणा मक्कए, इ
मे जीया विराहिया णिदिपा वेडदिपा, तेउणिया, उ-
दिपा, पचिदिपा, अमिहया वत्तिया, लेमिया म्प-
मपट्टिया, परियाणिया, मिलामिया, उरिया, उ-
सकामिया, जीणियाओ वणोणिया तम्म निच्छेत्ते इहं ।

तम्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विमल्लीकरणेण,
पावाण कम्मणं निज्जाएण, उ-
काउस्सग ॥

अत्रत्य उसमिएण, नीसमिण्ण, नालेण, सुंण
जभाएण, उइएणं, वायनिमण्ण, म्प-
सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं म्प-
दिहिसचालेहिं, एणमाइएहिं म्प-

हुञ्ज मे काउम्मगो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुवा-
रेण न पारमि ताव काय ठाण्णेण मोण्णेण भाण्णेण अप्पाण
वोमिरामि ।

(यहा एक लोगस्त का या चार नरपार का काउस्तमा करना
पीछे प्रगत लोगस्त कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

। लोगस्त उज्जोयगरे, धम्मतिथपरे जिण्णे । अरिहते
कित्तइस्स, चउत्तीस पि केवली ॥१॥ उम्भमज्जिअ च वंदे,
सभउमभिण्णदण च सुमइ च । पउमप्फह सुपासं, जिण च
चदप्पह वट ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल सिज्जस
वासुपुज्ज च । विमलमण्त च जिण, धम्म सतिं च
वदामि ॥३॥ कुयु अर च मलिं, वदे मुणिमुच्चय नमि-
जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमि, पास तह वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अभियुञ्जा, रिट्टयग्यमला पद्दीणजरमरणा । चउ-
त्तीसं पि जिणवरा, वित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिर-
वदिय-भडिया, जे ए लोगस्त उत्तमा सिद्धा । आरगगरो
हिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलपरा,
आइचेसु अहिय पवासपरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसतु ॥७॥

(अब उत्तरासन डालकर समासर्ण कर चैत्यवदन करें)

इच्छामि एमोममणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिमह भगवन् !
चैत्यवदन करूँ ? "इच्छ" । ।

ॐ चैत्यदान ॐ

श्री शत्रुञ्जय मिद्रुक्षेत्र, दीठ दुर्गति नारे ।
 भात्र घरीने जे चढे, तेने भत्र पार उतारे ॥१॥
 अनत सिद्धनो एह ठाम, मङ्गल तीर्थनो राय ।
 पूर्व नराणु ऋषभदत्र, ज्या ठनिया प्रभुपाय ॥२॥
 सुरज कु ढ सोहामणे, वज्रलचक्षत्रभिराम ।
 नामिराष कुल मङ्गणों, जिनपर करु प्रणाम ॥३॥

व किंचि नामकिंश्च, सग्गे पायालि माणुसे लोण ।
 जाडनिष्णत्रिगाड, ताड सत्राड वदामि ॥१॥

नमुत्पुण्य अरिहताण भगवताण ॥ १ ॥ आङ्गराण,
 तित्थयराण, मयसबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिसम्मीहाण,
 पुरिसपरपुडरीयाण, पुरिसपरगधहरथीण ॥३॥ लोसुत्तमाण,
 लोगनाहाण, लोगदिआण, लोगपदंराण, लोगपञ्चोअग-
 राण ॥ ४ ॥ अमषदयाण, चक्सुदयाण, मग्गदयाण,
 सरणदयाण, बोड्ढिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मटेमियाण,
 धम्मनायगाण, धम्ममारहीण, धम्मरचाडरतचक्कण्डीण
 ॥६॥ अप्पडिहयररनाणटसणधराण, मिअड्डउमाण ॥७॥
 जिण्णाण जावयाण, तिनाण तारयाण, पुद्धाण बोहयाण,
 मृत्ताण मोअगाण ॥८॥ सत्रब्रूण सत्रदरिसीण, मिरमय-
 लमअमणुत्तमअयमत्रागाहमपुणरागिच्छि, सिट्ठिगडनाम-
 घेय. ठाण मपत्ताण, नमी जिण्णाण, जियभयाण ॥९॥

जे अथ अह्या सिद्धा, जे अथ भविस्मतिणागए फाने ।
संपदध वट्टमाणा, सचे तिविहेणु वदामि ॥१०॥

(अथ दोनों हाथ जोडकर जय वीथराय कहना)

जय वीथराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमावओ
भगवण ! भवनिचेथो मग्गाणुसारिथा इट्टफलसिद्धि ॥१॥
सांगविठ्ठासाओ, गुरुजणपूथा परत्थकरुण च । मुहगुरुजोगो
म गणसोपणा आमवमउडा ॥२॥

इअदागि एमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निमीहि-
आण गणपण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
वीसवन्दन पत्तं ? "इच्छं"

ॐ श्रीव्यवन्दन ॐ

धी नीमभर जगधणी, आ भरते आगे,
एकणारंत वरुणा करी, अमने वदागे ॥१॥
सरल भरु तुमे धणी, एजो होवे अमनाथ,
मयोभय हुं छु ताहरो, नदी
रावल सग छस्तीकरि.
पाप तुमाराई
ए अलनो
इहां ^

नमुत्पुण्य अरिहताण्य भगवंताण्य । आङ्गराण्य तित्थ
 पराण्य सयसबुद्धाण्य । पुरिसुत्तमाण्य पुरिसमीहाण्य पुरिस-वर
 पुडरीआण्य पुरिसवर-गधहत्थीण्य । लोमुत्तमाण्य लोगनाहाण्य
 लोगहियाण्य लोगपईनाण्य लोगपज्जोअगराण्य अभयदयार्य
 चरमुदयाण्य मग्गदयार्यं सरणदयाण्य बोद्धिदयाण्य धम्म-
 दयाण्य धम्मदेमयाण्य धम्मनायकाण्य धम्ममारहीण्य धम्मर-
 घाउरत चक्रवड्डीण्य अप्पडिहयवरनाण्यटसणधराण्य विअइछ-
 उमाण्य जिण्णाण्य जावयाण्य, तिनाण्य तारयाण्य, बुद्धाण्य
 बोहयाण्य, मुत्ताण्य मोअगाण्य सत्तन्नूण्य सच्चदरिसीण्य,
 मियमपत्तमत्तअमण्यतमम्भवम गणाहमपुण्यराधित्ति, सिद्धिगद
 नामधय टाण्य सपत्ताण्य, नमो जिण्णाण्य जिअभयाण्य ।
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्मति खाण्य काले । सपडअ
 वड्ढमाणा, सब्बे तिविहेण्य वटामि ॥

अग्निहत्तचेइआण्य ऊरेमि काउस्मग्ग, वदण्यरत्तिआण्य,
 पूअण्यरत्तिआण्य, सङ्काररत्तिआण्य सम्प्राणवत्तिआण्य रोहि
 लाभरत्तिआण्य, निम्भसम्भारत्तिआण्य, सद्धाण्य, मेहाण्य,
 धिईण्य, धारणाण्य, अणुप्पहाण्य, वड्ढमाणीण्य, टामि
 काउस्मग्ग ॥

अचत्थ ऊसमिएण्य, नीससिएण्य, दासिएण्य, छीण्य,
 ज्भाइण्य, उहुण्यं, वायनिसग्गेण्य, भमलिए पित्तमुच्छाण्य,
 सुद्धमेहिं अगसुत्तल्लेहिं, सुद्धमेहिं खेलसचालेहिं, सुद्धमेहिं-

दिङ्मिचाल्लेहिं, एममाएहिं आगारेहिं भमग्गो अपिराहियो
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुक्का
 रेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मौखेण भाखेणं अप्पाण
 वोस्सिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा
 ध्याय सर्वसाधुभ्य ” कहकर थुइ कहना—

कलाणकूद पढम जिण्हिद, मत्तिं तयो नेमिज्जिण मुण्हिदं ।
 पास पयास सुमुण्हिउठाण, भत्तीइ वद सिरिउद्धमाण ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थपरे तिणे । अरिहते
 कित्तस्स, चउमीस पि केवली ॥१॥ उसभमज्जिय च वद,
 सभयमभिखदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण च
 चदप्पह वद ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत्त, सीयल सिज्जस
 वासुपुज्ज च । विमलमणत्त च तिण, धम्म सत्तिं च
 वदामि ॥३॥ कुयुं थर च मज्झि, वद मुण्हिसुव्वय नमि-
 तिण च ॥ वदामि रिद्धनेमिं, पास तइ वद्धमाण च ॥४॥
 एव मए अभिधुआ, विट्ठयस्यमत्ता पद्दीणजरमरणा । चउ-
 वीस पि जिणवरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ रिच्चिय-
 वदिय-महिया, ज ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवी
 हिलाभ, समाहिउग्गुत्तम दिंतु ॥६॥ चटेसु निम्मलपरा,
 आइचेसु अहिय पयासपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा मिद्धि
 मम दिसतु ॥७॥

सत्रलोए अरिहतचेडथाए, करेमि काउस्मग्ग वदण-
चत्तिआए, पूयणत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, मग्गणत्ति-
आए, बोहिलामत्तिआए, निरुपसग्गत्तिआए, सद्दाए,
मेहाए, धिर्देए, धारणाए, अणुप्पेहाए, रद्धमाणीए, ठामि
काउस्मग्ग ।

अन्नत्थ ऊमसिएण, नीमसिएण, खासिएण, द्धीएण,
जमाइएण, उट्टुएण, वायनिसग्गेण, भमलिण, पित्तमुञ्जाण,
सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलमचालेहिं सुट्टुमेहिं
दिट्ठिसचालेहिं, एरमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अपिगाहियो
हृज्ज मे काउस्मग्गो, जाय अरिहताण भगवताण, नमु-
कारेण न पारेमि, जाय जाय ठाणेष मोणेष भाणेष
अप्पाण वोसिमि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग करने प्रकट कल्लाणन्द की
दूसरी थुड नीचे दिने अनुसार कहना)

अपारससारसमुदपार, पत्ता मिय त्तित्तु सुइक्सार ।
सत्त्वे निण्दिदा सुग्गिन्ददा, म्हाणग्गीण विमालग्ग ॥२॥

पुक्खरखदीरद्धे, घायडसड अजबुदीव अ । भरहरय-
विदह, धम्मग्गरे नमसामि ॥१॥ तन्न विमिर-पडल विदु
सणस्स भुरगणनरिदमहिपस्स । सीमाधरस्स वद, पण्णेडिय
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरग्गसोगपणासणस्स, म्हाण-
पुनपुल विमाल-सुहारदस्स । को २

घम्मस्स सारमुवल्लभं करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो ! पपद्यो
 यमो निणमणं नदी सया सजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्स-
 भूअभासच्चिण । लोगो जत्थ पडड्डियो जगमिण तेलुवमच्चा
 सुर, घम्मो वड्डुड सासओ विजयओ घम्मत्तर वड्डुड ॥४॥
 सुअम्स भगवओ करेमि काउस्सग्ग । वदणत्तिआए, पूअण
 वत्तिआए, सक्कारत्तिआए, सम्माणत्तिआए, बोहिलामव-
 त्तिआए, निस्ससग्गत्तिआए । सट्ठाए मेहाए थिइए
 धारणाए अणुप्पेहाए वड्डुमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उममिएण नीससिएण, एसिएण छीणए,
 जभाडुणए, उट्टुणए, वायनिमग्गेण, भमलिए, पित्तमृन्धणए,
 सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं
 दिट्ठिसचालेहिं, एवमाएहिं आगारेहिं, अभग्गो अत्रिराहियो
 वृज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जार अरिहताण भगवताण नमु-
 कारणं न पारमि, ताव काय ठाणेण मोखेण भाणेण
 अप्पाए वोसिरामि ॥

(एक भवकारका काउस्सग्ग करके प्रकट 'कल्लाणन्द' की
 तीसरी शुद्ध कहना)

निव्याणमग्गे धरजाणकम्म, पणामियासेसकुवइदप्प ।
 मय जिणाण मरण पुहाण, नमामि निच विजगप्पहाण ॥३॥

सिद्धाण वृद्धाण, पारगयाण परपरगयाण । लोअग्ग-
 सुअगयाण नमो सया भवमिद्धाण ॥१॥ जो दयाण वि

द्वो, ज देवा पत्नी नममति । त देवदेवमहिम्न, मिग्मा
 वद महाग्रीर ॥२॥ इको वि नमुकारो, निष्णवरवसहस्त
 वदमाणस्त । ससारसागराथो, तारेइ नर व नारि वा ॥३॥
 उज्जितसेलसिद्धरे, दिवसानाण निर्मीहिश्चा जस्म । त
 घम्भचक्वट्टि, अरिद्धनेमि नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ट दम
 दो, य रदिषा जिष्णवरा चउत्वीम । परमट्ट निट्टियट्टा,
 सिद्धा मिट्टि मम दिसतु ॥५॥

वेयापच्चगराण सतिगराण सम्महिट्टिसमाहिगराण
 करेमि काउस्मग्ग ॥

अन्नत्थ उमसिएण, नीममिण्ण, सासिएण, छीएण,
 जमाएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिण पित्तमुच्छ्राण
 सुट्टुमेहि अगसचालेहि, सुट्टुमेहि मेलसचालेहि सुट्टुमडि
 दिट्टिमचालेहि, एवमाडएहि आगारेहि अभग्गे अपिरादिओ
 हुज्ज मे काउस्मग्गो, जार अरिहताण भगरताण, नमु-
 कारेण न पारमि, ताव काय टाणेण मोणेण भाणेण
 अप्पाण वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्य
 पाध्याय सर्वसाधुभ्य वह्नर 'कल्लाणवद' की चौथी बुद्ध कहनां

बुद्धिदुगोस्पीरतुसारवन्ना, सरोनहत्था कमत्ते निसन्न
 वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह मया पमत्था ॥४

नमुत्तुण अरिहताण भगवताण । आङ्गराण तित्य-
 पराण सयसनुद्धाण । पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिम रर
 पुढरीआण पुरिमरर गधदत्थीण । लोमुत्तमाण लोगनाहाण
 लोमहिआण लोगपर्दाण लोगपञ्जोअगराण अमपटथाण
 चक्सुटयाण मग्गदयाण मरुणदयाण बोहिऽयाण धम्म-
 दयाण धम्मदेमयाण धम्मनापगाण धम्ममारहीण धम्मव-
 चाउरत चक्खवट्ठीण अप्पटिहयवरनाणटसणधराण विअइळ-
 उमाण निणाण जाययाण, तिनाण तास्याण, दुट्टाण
 रोहयाण, सुत्ताण मोअगाण सञ्चन्नुण सवदरिमीण,
 मिअमयलमरअमणतमकउयम-गागाहमपुणरावित्ति, मिद्धिगड
 नामधेय ठाण सपत्ताण, नमी निणाण जिअमयाण ।
 जेअ अईया सिद्धा, जेअ अरिस्मति खाणण काले । सपइअ
 वट्टमाणा, सने तिरिहेण उदामि ॥

अरिहतचेइआण करेमि काउस्सग्ग, वदणउत्तिआए,
 पूअणउत्तिआए, सक्कारउत्तिआए मग्गाणउत्तिआए बोहि-
 लाभउत्तिआए, निरुवसगारउत्तिआण, मट्टाए, मेहाए,
 धिरेए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
 काउस्सग्ग ॥

अन्नत्य ऊत्तसिएण, नीसमिएण, एासिएण, छीएण,
 लमाइएण, उट्टुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पिनमुच्छाए,
 सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं

निद्विमचानेहि, एवमाटर्षहि आगारर्षि अभग्गो अपिराहिओ
हुज्ज मे काउस्मग्गो । ज्ञाप अरिहताण भग्गताण, नमुका-
रण न पारेमि तार ताय टाणेण मोखेण भाणेण अप्पाण
वीमिगमि ।

(एक नक्षत्रकार का काउस्मग्ग कर “नमोऽर्हन्मिद्वाचार्यापा
ध्याय सर्वेसाधुभ्य ” कहकर थुड कहना—

शरपेश्वर पामनी पूजीए, नरभग्नो लाढो लीजीए;
मनरञ्जित पूरण सुगतरु, जय धामामुत अलबेमरु ॥१॥

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतित्थयर निणे । अरिहते
क्खिच्छस्म, चउवीस पि केवली ॥१॥ उभममनिय च वद,
ममरममिणदण च सुमड च । पउमप्पह सुपाम, जिण च
चदप्पह वद ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत्त, सीअल-सिज्जस
वासुपुज्ज च । विमलमणत्त च जिण, धम्म सर्ति च
वदामि ॥३॥ कुधु अर च मल्लि, उड मुणिसुअवय नामि
जिण च ॥ वदामि रिड्ढनेमि, पास तद्द वदमाण च ॥४॥
एव मए अभियुआ, रिड्ढयग्गमला पहीणजरमण्णा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पमीयतु ॥५॥ क्खित्थिय-
वदिय-महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरग्गो
हिल्लाम, समाहिवरमुत्तम दित्तु ॥६॥ चदमु निम्मलयरा,
आइअेमु अहिय पयासयरा । मागरवरगभीरा, सिद्धा मिद्धि
मम दिसतु ॥७॥

सत्र्यलौए थरिहत्तचेडथाण, करेमि काउम्मसग्ग उदण-
वत्तिआए, पूयणवत्तिआए, सवाग्वत्तिआए, सम्माणवत्ति-
आए, मोहिलाभवत्तिआए, निहणमग्गवत्तिआए, सद्दाए,
मेहाए, धिट्टए, धाण्णाए, थणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
काउम्मग्ग ।

अनत्थ ऊम्मिएण, नीमसिएण, खामिएण, छीएणं,
जभाइएण, उट्टुएणं, वायनिमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,
सुट्टुमेहिं थगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
दिट्ठिमचालेहिं, एणमाइएहिं थागारहिं थभग्गी अनिराहिथो
हुज्ज मे काउम्मग्गो । जाण थरिहताण भगवताण, नमुक्का-
रेण न पाणमि ताव काय टाणेण मोखेण भाणेण अप्पाणं
वोसिरामि ।

(एक नत्रकार का काउम्मसग्ग करके दूसरी धुइ नीचे लिखे
अनुसार कहना)

दोय राता निनरर अति भला, दोय धोला निनरर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल रुणा, सोले जिन कचन वर्ण लज्जा ॥२॥

पुसग्गग्गदीरड्ढे, धायइमड थ जघुदीवे थ । भग्गेरवय-
विदेह, धम्माइगरे नमसामि ॥१॥ तम विमिर-पडल विद्धं
सणस्म सुराणनरिंदमहियस्म । सीमाधरस्म वड, पप्फोडिथ
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजराभरणसोगपणासणस्म, कल्लाण-
पुम्बल विसाल-सुहायइस्स । को देवदाणवनरिंदगणधियस्स,

धम्मम्म सारसुत्तं भ कर पमाय ॥३॥ सिद्धे मो ! पयथो
 णमो निणमए नदी मया स नमे, देवनागसुवन्नकिन्नगणस्स
 भूयभायच्चिए । लोगो जन्थ पडट्टियो जगमिण तेलुइमया
 सुर, धम्मो वडडउ मात्तथो विज्जपथो धम्मुत्तर उड्डउ ॥४॥
 सुअस्म भगरयो रुरमि काउस्मग्ग । उदणत्तिआए, पूअण-
 चत्तिआए, सक्कात्तिआए, सम्माणत्तिआए, मोहिलाभव-
 त्तिआए, निस्सग्गत्तिआए । सद्राए मेहाए धिउण
 धारणाए अणुप्पहाए वड्डमार्गीए टामि काउस्मग्ग ।

अन्नत्य उमणिएण नीत्तिएण, तात्तिएण छीएण,
 जमाउएण, उड्डएण, वायनिसग्गेण, ममलिए, पित्तमुच्छाए,
 सुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं, खेत्तसचालेहिं, सुट्टुमेहिं
 दिट्टिमचालेहिं, एवमाउण्हिं आगारहिं, अमग्गो अरिराहियो
 इज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाय अरिहताण भगवताण नमु-
 कारेण न पारेमि, ताव काय टाणेण मोणेण भाणेण
 अण्णाए वोत्तिगमि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग तीसरी बुद्ध कहना)

आगम ते जिन्दर भाणियो, गणधर ते हँड रात्तियो,
 तेनो रम जेणे चात्तियो, ते हूवो शिवमुख मात्तियो ॥३॥

सिद्धाए बुद्धाए, पारगयाए परपरगयाए । लोअग्ग-
 मुवगपाए नमो सपा सच्चमिद्धाए ॥१॥ जो ५५

देवो, ज द्या पजली नमसति । त देवदेवमहिम्नं, मिग्मा
 वदे महावीर ॥२॥ इथो वि नमुवारो, विणवरवमहम्म
 वद्धमाणस्स । समारमागराथो, तारेइ नर व नारिं रा ॥३॥
 उज्जितसेलामिहरे, दिक्कपानाण निमीहिथा जस्म । त
 धम्मचङ्कणहिं, अरिद्धनेमिं नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ट दस
 दो, य वटिया विणपरा चउत्वीस । परमट्ट निट्टिअट्टा,
 मिट्टा मिट्टि मम दिसतु ॥५॥

वयापचगराण सत्तिगराण सम्मदिट्टिसमाहिगराण
 करमि काउस्मग्ग ॥

अक्षय ऊमसिण्ण, नीमणिण्ण, खामिण्ण, छीण्ण,
 जमाडण्ण, उट्टुण्ण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुञ्छण्ण,
 सुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, सुट्टुमेहिं गेलसचालेहिं सुट्टुमेहिं
 दिट्टिसचालेहिं, एवमेडण्णिं आगारहिं अमग्गो अरिराहिंओ
 हुज्ज मे काउस्मग्गो, जाय अरिद्धताण भगवताण, नमु-
 कारण न पारमि, तार काय ठण्णेण मोण्णेण भाण्णेण
 अप्पाण वोमिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्मग्ग पारकर "नमोऽहन्तिद्वाचार्यो
 पाण्ड्याय सर्वसाधुभ्य वहन्त चौधी धुइ कहना)

धरणीधरराय पद्मावती, प्रभु पारर्ष तणा गुण गावती,
 सहु सधना सनट चूरती, नय विमलनां वल्लित पूरती ॥४॥

नमुत्पुण्य अरिहताणं भगवताण ॥ १ ॥ अङ्गराणं,
 तित्थपराण, सयसबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिमसीहाण,
 पुरिसवरपुडरीभाण, पुरिसपरगघहत्थीण ॥३॥ लोमुत्तमाण,
 लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपद्दाण, लोगपज्जोथग-
 राण ॥ ४ ॥ थभयदयाण, चक्रुट्टयाण, मग्गदयाण,
 सरणदयाण, रोहिट्टयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसिआण,
 धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मरचाउरतचक्कवट्ठीणं
 ॥६॥ अप्पडिहयपरनाणटमणधराण, निअट्टुल्लउमाण ॥७॥
 जिणाण जाणयाण, तिनाण तारयाण, शुद्धाण बोहयाण,
 मुत्ताण मोथगाण ॥८॥ मव्वन्धुण सत्त्वदरिसीण, सिरमप-
 लमरुअमणत्तमकरयमनाहामपुण्यरानित्ति, मिट्ठिगण्ढनाम-
 धेय, ठाण सपताण, नमो निणाण, जिअमपाण ॥९॥
 जे थ अइथा सिद्धा, जे थ मणिससत्तिणाणए शाले ।
 सपइअ वट्टमाणा, सवे तिनिहण वदामि ॥१०॥

जावति चेइआइ, उड्ढेअ अहे थ तिरिअ लोए थ ।
 सत्वाइ ताइ गटे, इह सतो वत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि एमाममणो गदिउ जाणयिज्जाए निसीहि
 आए मत्थएण वदामि ॥

जावत केवि साहू, भरहरय महाविदेह थ । मवेमि
 तेमि पण्यो, विनिहण तिदइ निरयाए ॥१॥

नमोऽर्हन्तिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उग्रमगधर पार्म, पास उदामि रुम्मघणमुक् । विसहर-
 विमनिवास, मगलरुझाण आराम ॥१॥ विसहर कुलिंगमत,
 फटे धारेइ जो सथा मणुओ । तस्म गइरोगमारी, दुडुनरा
 जति उरसाम ॥२॥ चिट्टउ दूरे मतो, तुज्ज्क पषामो रि
 बट्टफलो होइ । नरतिगिएसु रि जीया, पावति न दुक्खदोगच्च
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लड्डे, चिनामणिकप्पपायउम्महिए ।
 पावति अविग्घण, जीया अयरामरं टाण ॥४॥ इय सधुओ
 महायस, भत्तिअग्निभरेण हियण्ण । ता देव दिज्जमोहिं,
 मवे भवे पासजिणचद ॥५॥

❀ स्तवन ❀

प्रथम जिनेधर प्रणमीए, जस्य सुगधीरे काय ।
 कन्पट्टच्च परे तास इद्राणी नयन जे, भृ गपरे लफटाय ॥१॥
 रोग उरग तुज नरि नडे, अमृत जे आस्वाद ।
 तेहथी प्रतिहत तेह मानु कोइ नरि करे, जगमा तुमशु रे वादा ॥२॥
 वगर धोइ तुज निर्मली, काया कचन पान ।
 नहि प्रस्वेद लगार तार तु तेहने, जे धरे ताहं ध्यान ॥३॥
 राग गयो तुज मनथसी, तेहमा चित्र न कोष ।
 रुधिर आमिपथी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय ॥४॥
 आसोच्छ्वास कमलसमो, तुज लोकोत्तर वाद ।
 दसे न थाहार निहार चर्मचनु धणी, एहमा तुन अउदात्त ॥५॥
 चार अतिशय मूलकी, श्रोगणीश देवना कीध ।

कर्म सुप्यायी अग्यार चोरीश एम अतिरया, ममरायाने प्रमिद्ध
चिन उत्तन गुण गारता, गुण थार नित थन ।

पमरिन्ध ऋहे एह ममय प्रमु पालनो, जेम थाउ अक्षय अमगा॥७॥

(अथ दोना हाथ जोडरु जय वीश्राय कटना)

जय वीश्राय ! जगगुरु !, होउ मर्म तुद् पमारओ
मयव ! मरनिन्वओ मगाणुसारिथा इहफलमिद्धि ॥१॥
लोगरिद्धचाओ, गुणपूआ परत्यरुरा च । मुद्गुरुचोगो
तत्रयणसेरणा थामरमउडा ॥२॥

इच्छामि एमाममखो वदिउ जावणिज्जाए निमीदि-
थाए मत्थएण वदामि ॥ इच्छामारेण मदिमह भगवन् ।
चैत्यवन्दन करु ? "इच्छ"

❀ चैत्यवन्दन ❀

जय चिंतामणि पार्थनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ।

अष्ट कर्म रिपु जीर्णने, परम गति पाप्मि ॥ १ ॥

प्रभु नामे थानद रुद, सुख सपत्ति लहिये ।

प्रभु नामे मर भय तणा, पातरु दुख दहिये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वरुण जोडी करी ए, जपीण पार्थ नाम ।

रिपु अमृत थद् परिणमे, पाप्मे अरिचल ठाम ॥ ३ ॥

ज किंचि नामतित्य, मग्गे पापालि भाणुसे लोए ।
ज्जाई तिखनिवाइ, ताइ सन्नाइ वदामि ॥

नमुत्सुण अरिहताण भगवताण । आङ्गराण वित्थ-
 मराण मप्रममुद्धाण । पुरिसुत्तमाण पुरिसमीहाण पुरिस-वर
 पुह्हरायाण पुरिमवर गधहत्थीण । लोगुत्तमाण लोगनाहाण
 लोगहिआण लोगपर्दनाण लोगपञ्जोअगराण अभयदयाण
 चकसुदयाण मग्गदयाण मरणदयाण बोद्धिदयाण धम्म-
 दयाण धम्मडेसयाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मर-
 चाउरत चकउद्धीण अप्पडिहयवरनाणदसणधराण पिअड्ड-
 उमाण जिणायण जणयाण, तिनाण तास्याण, बुद्धाण
 बोहयाण, मुत्ताण मीअगाण स-उण स-वदरिसीण,
 मियमयलमरुअमणतमसुयम-गमाइमपुणरानिचि, मिद्धिगइ
 नामधेय टाण सपत्ताण, नमो जिणायण निअभयाण ।
 जे अ अईआ मिद्धा, जे अ भविस्मति णागाण जाले । मपइअ
 वट्टमाणा, स-ने तिविहंग उदामि ॥

(अथ दोनां हाय जोहमर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पमाउयो
 भयउ ! भवनिवेओ मग्गाणुसारिया इड्डफलमिद्धि ॥१॥
 लोगनिरुद्धचाओ, गुण्जणपूया परत्थररण च । सुहगुरुजोगो
 तत्रयणसेउणा आभयमएडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि
 निआण वधण वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज
 सेगा, भवे भवे तुम्ह चलयाण ॥३॥ दुक्खएओ कम्मएओ,
 आदिमरण च बोहिलामो अ । सपज्जउ महएअ, तुहनाह

पणाम दग्धेण ॥४॥ मर्ममगलमागन्ध, मर्मरन्ध्याण मगणम् ।
प्रधान मर्मप्रमोणा जैन जपति शामनम् ॥५॥

(पौद्)

विधि रगत दृण कीट थरिथिहुई हो तस्म मिच्छामि दुषड ।



(सुनह के देयवन्दन के अन्त म "मन्नहजिणाण" की मज्जाय कहे । पहिले रामाममण अकर एक नत्रकार गिनतर निर मन्नाय करना, मन्धाहून और सायकाल में मज्जाय नहीं करना)

इच्छामि रामाममणो वदिउ जाणणिज्जाण निर्मीहि-
थाण मत्थएण वदामि ॥ इच्छामरेण सदिसह मगणन् ।
मज्जाय ररु १ "इच्छ"

नमो अग्निताण । नमो मिद्राण । नमो आयरियाण ।
नमो उरज्जायाण । नमो लोण मज्जमाहण । नमो पच नमु-
कारो । सत्तपाणप्पणामणो । मगलाण च सवेमि पढम
हउड मगल ॥१॥

अथ मन्नह जिणाण मज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह सम्पत्त ।
छन्दिह थारस्सयम्मि, उज्जुत्तो होड पइदिवम ॥ १ ॥
पवेसु पोमहणय, दाण सील ततो थ भासो अ ।
सज्जाय नमुकारो, परोवयारो अ जयणा थ ॥ २ ॥

निष्पृथा विग्नदुग्गण, गुरधुश्रमादृम्भियाग वच्छेत् ।
 वरदाग्म्य य सुर्द्धा, रहज्जा तिथयत्ता य ॥ ३ ॥
 उरसम विद्यग सपर, मागागमिर्दृष्टनीय कम्पना य ।
 धम्मिथज्जयममगो, रगदमो चरदापमिलामो ॥ ४ ॥
 सधोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिदग पयापणा निच ।
 सङ्हाण मिथमेय, निर गुगुम्बसेण ॥ ५ ॥ इति ॥

-ॐ ॐ ॐ-

॥ श्री पर्युषण पर्ये का चैत्यरन्दन ॥

पर्ये पर्युषण गुणनीलो, नर कल्प विहार ।
 चार मागातर स्थिर रह, एहीच अर्थ उदार ॥ १ ॥
 थापाड शुद्ध चौदश थरी, मत्तगरी पचाय ।
 मुनिर दिन नीनेत्ते, पडिक्कपता चउमाय ॥ २ ॥
 गाय पण ममता धरी, रर गुम्ता बहुमान ।
 कल्पपत्र सुनिहित मुने, सामले यड एतान ॥ ३ ॥
 निनर चैत्य जुझारीये, गुम्भत्रि विशाल ।
 प्राये अष्ट भयातरे, वरीय शिर वरमाल ॥ ४ ॥
 दर्पणथी निज रूपनो, जुए मुदधि रूप ।
 दर्पण अनुभव अर्पण, मान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
 आत्मस्वरूप विलोकना, प्रगत्यो मिर स्वभाय ।
 राय उदायी सात्रणा, पर पर्युषण दार ॥ ६ ॥
 नर वसाण पूनी सुणो, शुक्ल चतुर्थी ॥ इति ॥

पचमी िन वापे मुणे, होय विरोधी नीमा ॥ ७ ॥

ण नहीं परे पचमी, मरं ममागी चोय ।

मरभीरु मुनि मानणे, माव्यु अरिहा नाथे ॥ ८ ॥

श्रुत करली वपणा मुणी, लही मानर अमतार ।

श्री शुभ रीग्ने शासने, पाभ्या जय जयहार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीष्ण म्यानरु तर चैत्यरन्दन ॥

पहले पट अरिहत नष्ट, वीन नर मिद्व ।

रीने प्रपचन मन धरो, आगारन मिद्व ॥ १ ॥

नमो वराण पारमे, पाटक गुण छट्टे ।

नमो लोण मज्ज माद्वण, जे छ गुण गरिद्वे ॥ २ ॥

नमो नाणुस्स आठमे, दर्शन पद प्यसो ।

पिनय करे गुणवतनो, चारिश्च मन मागो ॥ ३ ॥

नमो चमयप धारिण नेम विरियाण ।

नमो तपस्स चौदमे, गोयम नमो त्रिणाड ॥ ४ ॥

अचारिण ताण शुभस्सने ए, नमो विस्सुवर्ण ।

नित उतम पद पञ्चने, नमता होय मृदु ॥ ५ ॥

॥ दून विविक्ता चैत्यरन्दन ॥

दुवित्र धर्म निणे उपविश्यो, वीण मन्त्रेण ।

वीज जन्म्या ते प्रभु, मर दुग्ग ज्ञेय ॥ ६ ॥

१ श्वरि । २ उपाध्याय । ३ मन्त्र । ४ मन्त्र । ५

अथवा भुत-मिद्वानु, जो ८/५ ॥

द्रविध ध्यान तम परिहरो, आत्मो दोष ध्यान ।
इम प्रसादयु सुमति निने, ते चरिया बीज दिन ॥ २ ॥
दोष उघन राग द्वेष, तदने भवि तर्जिये ।
मुज परे शीतल निन रुहे, बीज दिन शिव भर्जिये ॥ ३ ॥
जीराजीव पदार्थनु, करो नाग मुजाण ।
वीन दिने वामुपूज्य परे, लहो केवलमान ॥ ४ ॥
निश्चय ने व्यवहार दोष, एजाते न ग्रहीये ।
अरपिन वीन दिने चवी, एम जन आगल रुढीये ॥ ५ ॥
वर्तमान चोरीशीण, एम जिन कल्याण ।
वीन दिने केड पामीया, प्रभु नाण निर्माण ॥ ६ ॥
एम अनत चोरीशीण, हुआ उद्दु कल्याण ।
पिन उत्तम प पचने, नमता होय सुख एाण ॥ ७ ॥

॥ पचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगंडे नेठा धीर जिन, माग्ने भविचन आगे ।
त्रिस्तरणशु त्रिहुँ लोक जन, निमुखो मन रागे ॥ १ ॥
आराधो भली भावसें, पात्रम अजुआली ।
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिवि निहाली ॥ २ ॥
ज्ञान पिना पशु सारिया, जाणो एणे ससार ।
ज्ञान आराधनयी लहे, शिखर मुए श्रीकार ॥ ३ ॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काम कुसुम उपमान ।
लोकालोक प्रमाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी चासोशाममा, करे र्मनो छेह ।
 पूर्ण कीडी बरसा लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥
 दण आराधक क्रिया रही, मर्न आराधक ज्ञान ।
 ज्ञान तखो महिमा घणो, अग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥
 पच माम लघु पचमी, जायाजीव उरुष्टी ।
 पच वग्म पच मामनी, पचमी रगे शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥
 एकाग्र ही पचनो ए, पाउस्मग्ग लोगस्म केरो ।
 उजमणु रगे मायशु, टालो भर फरो ॥ ८ ॥
 षण्ठी पर पचमी आराधीण, आणी माय अपार ।
 वरदत्त गुणमन्त्री परे, रगत्रिनय लहो माग ॥ ९ ॥
 ॥ श्री अष्टमी चैत्यवन्दन ॥
 माह शुदी आठम दिने विजया सुत जायो ।
 तेम फागण शुदि आठमं, ममव चरी आर्यो ॥ १ ॥
 चैत्र उदिनी आठमे, जन्म्या ऋषम जिनद ।
 दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचढ ॥ २ ॥
 माय शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्पा दूर ।
 अभिनदन चौथा प्रभु, पास्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
 एहीन आठम उजली, जन्म्या मुमति विनद ।
 आठ जाति फलशे ररी, नररावे सुर इद ॥ ४ ॥
 जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुत्रत स्वामी ।
 नेम अषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
 आस्या-वदनी आठमे, नमि जन्म्या जग

तम थारण शुचि आठमे, पासनीनु निरराण ॥ ६ ॥
 भाद्रमा उदी आठम दिने, चरिया स्वामी सुषाम ।
 जिन उत्तम पद पश्ये, सेयायी शिरपास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैयन्दन ॥

शासन नायक रीरजी, प्रभु केवल पायो ।
 सष चतुस्रिथ थापना, महसेन वन आयो ॥ १ ॥
 माधव मित एकादशी, मोमिल ढिज यज्ञ ।
 इन्द्रभृति आदि मन्या, एकादश दिन ॥ २ ॥
 एकादशमो चउ गुणा, नेहते पगियार ।
 वद अर्थ अयलो कर, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥
 जीवात्कि सशय हरी, एकादश गगुधार ।
 वीर थाप्या वदीय, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥
 मल्लि वन्म थर मल्लि पाम, वर चरण विलासी ।
 ऋषम अचित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनागी ॥ ५ ॥
 पन्नप्रम शिर पास पास, भव-भवना लोडी ।
 एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि मधली जोडी ॥ ६ ॥
 दण क्षेत्रे निहुँ रालना, प्रणसे वन्याण ।
 वरम अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥
 अगीपार अग लग्गारिये, एकादश पाठा ।
 पुत्रणी टरणी वीदणी, मरी-कागल नै काठा ॥ ८ ॥
 अगीपार अत्रउ झाडवा ण, वदो पडिमा अगीपार ।

सुमतिविजय तिनशामने, मफल कगे अस्तार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचक्रजी का चैत्यमन्दन ॥

पदले प८ अग्निहता, गुण गायो नित्य ।

वाजे सिद्ध तथा घणा, ममगे ए८ यिते ॥ १ ॥

आचारन नीचे पद, प्रथमो सिद्ध कर चौडी ।

नमीये श्रीडरभायने, चौथ म८ मोडी ॥ २ ॥

पचम पद मर साधुनु, नमता न आणो लान ।

ए परमेष्ठी पने, ध्याने अचिचल रान ॥ ३ ॥

दसण-गमादिक रहित, प८ छट्टे धामे ।

सर्वे नाण पद सातमे, चण ए८ न विमारो ॥ ४ ॥

चारित्र चोखु चितथी, प८ अष्टम उर्पीय ।

मफल भे८ बीच दान-फल, तप नममे तपीये ॥ ५ ॥

ए सिद्धचक्र आगधता, ए८ रंजिथे मोड ।

सुमतिविजय मरिरायनो, राम वहे कर जोड ॥ ६ ॥

॥ दीवाली का चैत्यमन्दन ॥

सिद्धार्थ नप कुल-विलो, निशला जस मान ।

हरि लज्जत तनु मात हाथ, महिमा निरयात ॥ १ ॥

श्रीश वरस गृहवाम छोडी, लिय मयम भार ।

नारा वरस उग्रमथ मान, लही करल सार ॥ २ ॥

श्रीश वरस इस मरि मली, रदोतर थायु प्रमाण ।

दीवाली दिन शिर गणा, नय वहे ते गुण राण्य ॥ ३ ॥

॥ श्री पर्युषण पर्व का स्तवन ॥

पुण्यजो सावन मत पञ्चमण आच्यार, तमे पुन्य करो पुन्यवत,
भविकु मन भाच्यारे, (आकणी)

वीर निणेशर अति अलबेशर, गढाला मारा परमेश्वर एम बोलेरे
पर्व माहे पञ्चमण महोटा, अघर न आवे तम तोलेरे,

पञ्चमण आच्यार रे, तमे० १

चउपद माह जेम केसरि भोटो, वा० एगमा गण्ड कडीण रे,
नदी माहे जेम गगा महोटी, नगमा मेरु लहीण रे, प० २

भूपतिमा मरतेसर भाच्यो, वा० टवमाहे सुर इन्द्र रे,

तीरथमाँ शेनुञ्जो टारयो, ग्रहगणमा जेम चन्द्र रे, प० ३

दशरा दीयाली ने उली होली, वा० अण्णारीन दीयामो रे,

बलेन प्रमुस बहुला छे बीजा, पण नहीं मुक्तिनो वामोरे प ४

ते माटे तम अमर पलायो, वा० अट्टाड महोत्सव कीजे रे,

अट्टम तप अधिकाइए करीने, नरमन लाहो लीजे रे, प० ५

ढोल ददामा मेरी नफेरी, वा० कल्पधर ने जगानो र,

आभरना भूमकार करीने, गोरीनी टोली मली आगोरे, प० ६

सोना रूपाने फूलडे रधावो, वा० कल्पधरने पूजो रे,

नव वण्ण विधिए साभलता, पाप मेवामी ध्रुजे रे, प० ७

एम अट्टार्दनो महोत्सव करता वा० बहु जीव जग उद्वरियारे;

विषुध विमलवर सेवक एहथी, नगनिधि अदि सिद्धि

वरियारे, प० ८

सम ल्गो स्वाद, चीबने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥
 जी० बीज फरो दोय मास, उरकृष्टी बावीश मामनी जी ॥
 जी० चोविहार उपगम, पालिये शील वसुधत्सनी जी ॥११॥
 जी० आरश्यक दोय वार पडिलेहण दोय लीजिये जी ।
 जी० देववदन ग्रण काल, मन वच कायाम कीजिये जी
 ॥१२॥ जी० उनमणु शुभ चित्त, कुरी धरिये सयोगधी
 जी । जी० चिनगणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगधी
 जी ॥१३॥ जी० इण विधि करिये हो बीज, राग ने द्वेष
 दूरे करी जी । जी० केवलपद लही ताम, वरे मुक्ति उलठ
 धरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, रिनय करी सेवो
 सदा जी । जी० पद्मपिजयनो शिष्य, भक्ति पावे सुख सपदा
 जी ॥१५॥

॥ ज्ञानपचमी का स्तवन ॥ ७

मुक्त सिद्धार्थ भूपनो रे, सिद्धार्थ भगवान । बारह परखदा
 आगले रे, मासे श्री वर्धमानो रे; भणियण चित्त धरो, मन
 वच काय अमायो रे; ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आकर्णी ॥१॥
 गुण अनन्त आत्म तणा रे, गुरूपणो विहा दोय । तेहमा
 पण नानन वडु रे, निणधी दरसण हीप रे, म० ॥२॥ ज्ञाने
 चारित्र गुण ववे रे, नाने उद्योत सहाप । ज्ञाने विभिग्णु
 लहे रे, आचारज उभगाय रे; म० ॥३॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमा
 रे, फटिन कतम करे नाश । वडि लेम इन्वन दहे रे,

चणमा च्योति प्रमाशो रे, म० ॥४॥ प्रथम वान पत्री दया
 रे, सवर मोह विनाश । गुण टारखंग पग थालीये रे, जेम चढे
 मोद आशमो रे, म० ॥५॥ मड मुभ ओहि मणपञ्जरा रे
 पेचम केरलनान । चउ मुगा श्रुत एक छे रे, स्व पर,
 प्रमाश निदानो रे, म० ॥६॥ तेहना साधन जे कर्त्तारे रे,
 पाटी पुस्तक आदि । लखे लखावे साचवे रे, घर्मी धर्मी
 अप्रमादो - रे, म० ॥७॥ त्रिविध आशावना जे कर रे,
 भणता करे अतराय । अधा बहरा मोरडा रे, मुगा पागला
 थाय रे, म० ॥८॥ मणगा गुणजा न आयड रे, न मले
 चल्लम चीज । गुणमजरी चरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन
 चीज रे, म० ॥९॥ प्रेमे पूट्टे परगदा रे, प्रणमी जग-
 गुरु पाय । गुणमजरी चरदत्तनो रे, कडो अधिकार
 पमायो रे, म० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्वरन ॥

हारे मारे टाम धरमना माडा पचमीग दश जो, दीप रे त्यां
 देश प्रगथ सहमा शिरे रे लोल । हा रे मारे नगरी
 तेहमा गार्जगृही मुपिशेय जो, राजे रे त्यां श्रेणिकु यान
 गज परे रे लोल ॥१॥ हा रे मारे गाम नगर पुर 'पारन
 करता नाथ जो, विचरंता त्यां श्वर्मी धीर समोत्तर्या रलोल
 हा रे मारे चउद सहम मुनिरनो साव । साय जो, सुधा र
 वष समय शिपले अलकर्या रे लोल ॥२॥ हा रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अर कटव जो, जाणु रे गुणशील
 वन हसी रोमाचियो रे लोल । हा रे मारे वाया वाय
 सुवाय तीहा अत्रिलंग जो, गसे रे परिमल चिहु पासे
 सचियो रे लोल ॥३॥ हा रे मारे देव चतुर्विध आवे फोडा
 फोड जो, त्रिगडु रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लोल ।
 हा रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस
 लागे इद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मणिसय
 हेम सिंहासन बेठा आप जो, ढाले रे सुर धामर मणिरत्ने
 जड्याँ रे लोल । हाँ रे मारे सुणताँ दु दुमि नाद टले सवी
 ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अर्थाँ रे लोल ॥५॥
 हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लु व जो, राजे रे
 चिनराज समाजे धर्मने रे लोल । हाँ रे मारे निरसी हरसी
 आवे जन मन लु व जो, पोपे रे रस न पडे घोरे धर्मने
 रे लोल ॥ ६ ॥ हाँ रे मारे आगम जाणी जिनने श्रेणिक
 राय जो, आय्यो रे परिवरियो हय मय रथ पायगे रे लोल ।
 हाँ रे मारे दह प्रदक्षिणा वदी बेठी ठाय जो, सुणग रे
 जिनराणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हाँ रे मारे त्रिभुवन
 नायक स्थायक नर भगवत जो, आणी रे जन करुणा
 धर्मरुपा कह रे लोल । हाँ रे मारे सहज विरोध विसारी
 जगना जतु जो, सुणवा रे जिनराणी मनमा गहगहे
 रे लोल ॥ ८ ॥

॥ पञ्चदशी का स्तवन ॥

ममवसरण दग भगवत, धर्म प्रकाशे श्रीयत्किंत ।
 धार परपदा चैठी स्त्री, मागनिर शुदी अर्गीथारस वडी
 ॥ १ ॥ मल्लिनाथना वान कन्याण, जन्म दीवाने केवलनाथ ।
 अरजिन दीवा लीवी स्त्री, मागनिर शुदी अर्गीभारम वडी
 ॥ २ ॥ नमिने उपजु कवलवान, पांच कन्याणक अति-
 प्रधान । ए तिथिना मदिमा वडी माग० ॥ ३ ॥ पांच
 भरत ऐरावत इमही ज, पांच कन्याणक हुए निमही ज ।
 पचामनी सरय्य परगटी माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
 गख ॥ एम, दोदमो कन्याणक बाप तेम । वृण तिथि छ
 ए तिथि जे वडी, माग० ॥ ५ ॥ अनव चोरीणी इण परे
 गणो, लाभ अनत उस्ताव वणा । ए तिथि मटु जिर ०
 खडी, माग ॥ ६ ॥ शंभराख रद्या श्रीमल्लिनाथ, ए
 दिवम संयम त्र बाध । पंत वृणी परे त्र इम वडी,
 माग० ॥ ७ ॥ धादु कारी शयद लीजिण, शंभिर
 त्रिविशु कीजिय । एव शयद न ईन घटी, माग० ॥ ८ ॥
 वर्ष इग्यार कीजे उपमान, सत जव पण अयिद छव ।
 ए तिथि मोव नखी पतिव, माग० ॥ ९ ॥ उजकतु ईर
 श्रीकार, झानोपगरण शयद शयद । इगे काउमन उ
 पाय पडी, माग० ॥ १० ॥ शयद स्नाय कंठि वला,
 पोथी पूजिने मन खी । शयद कीजे ५

॥ ११ ॥ मौन थर्यारस मोडु परे, आगध्यां मुग लहीये
 सर्प । तव पचनखाण करो भासुडी, माग० ॥ १२ ॥
 जेमल सोल इन्पामी समे, कीधु स्वरन सह मन गमे ।
 समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीश स्थानक स्वरन ॥

हारे मारे प्रणमु सम्वती मागु वचन विलामजो,
 वीशरे तप स्थानक महिमा गार्डशु रे लोल ॥ हारे मारे
 प्रथम अरिहत पद लोगस्म चोत्रीमजो, मीनेरे सिद्ध स्था-
 नक पत्तर भागशु रे लोल ॥ १ ॥ हा० श्रीने पचपणमु
 गणशो लोगस्म सातजो, चउधेरे अयरियाणं छत्रीमनो
 सहीरे लोल ॥ हा० ॥ बेराण्य पद पचमे दस उदारजो, छट्टेरे
 उवजभायाण्य पचत्रीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हा० मातमे
 नमोलोए सत्रमाहु सतात्रीसनो, आटमे नमो नाणस्स पंचे
 भागशु रे लोल ॥ हा० नत्रमे दरिमण सडराठ मनने उदारजो,
 दशमे नमो त्रिणपस्स दस वटाणीएरे ॥ ३ ॥ हा० अग्गी-
 थारमे नमो चारित्तस्म लोगस्म सत्तरजो, पारमे नमो
 षमस्म नत्रगुणे सहीरे लो० ॥ हा० ॥ कीरियाण्य पट्टेरेमे
 वली पचत्रीमजो, चउदमे नमो तवस्स चार गुणे सहीरे
 लो० ॥ ४ ॥ हा० पंदरमे नमो गोयमस्स अहारीमजो नमो ।
 जिणाय चउत्रीस गणशु सोलमेरे ली० ॥ सत्तरमे नमो
 चारित्त लोगस्स सिचेर जो, नाखस्सनो पद गणशु ण्यावन

अद्वाग्वरे लो० ॥ ५ ॥ हा० श्रोगर्गाममे नमो मुखस्म रोम
पीसालीमयो, वीममे नमो त्रिबन्ध वीम भासुरे लो० ॥

हा० तपनो महिमा चारमे उपर वीमजो, पटमासे एरु थोली
पूरी कीदिणे लो० ॥ ६ ॥ हा० तप करतां वली गणीधे
दोषद्वारा जो, नवकारानो जोस ध्यानक भासुरे लो० ॥

हा० प्रमायना मध सरामी वच्छल सारजो, उजमणी त्रिभि
कीनिण विनय लीदिणरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमा करो
नी चीर जिनरायजो, विस्तारे इम सबध सोयम रातिगेरे
लो ॥ हा० तप करतां वली तीवकर पद होपजो, दवगुह इम
कांति रावन सोदामणारे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालकृमार श्वेतवर्ण अरिदत्त आराधे, वीतराम
आतम गुण साधे, अमृतदश मल जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध पृष्ठ
परमात्मा ध्याये, रत्नवर्ण आलवन पाये, सिद्ध आठ गणधार
॥ श्री २ ॥ दुर्नीम गुण आचारज सोढ, पीत वर्ण ध्याये
मन मोहे, स्वपर तारणहार ॥ श्री ३ ॥ पद्मे-पद्माये योग्य
वनाये, नील वरण आतम गुण गाये पाठक पद अघात
॥ श्री ४ ॥ पद्म पद जो भोग से मजीए, श्याम वरण
सर पाप जो तनीए, धन माधु अणुगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन
ज्ञान चरण तप चारे, श्वेतवर्ण साधन अघाते निश्च
और व्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गाये भारे, आत
लक्ष्मी-द्वय मनारे, गल्लभ जय जयकार

॥ दीवाली स्तवन ॥

ज्यो जगन्नामी वीरजिन्द ॥ टै ॥ नगर अयापा
 में प्रभु आवे, भविजन को उपकार करद ॥ ज० १ ॥ निज
 निरवान समय मे जानी, सोला पहर प्रभु धर्म कहद
 ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पदरसमो राने, प्रात काल प्रभु
 मुक्ति लहद ॥ ज० ३ ॥ परमात्मा पद छिनरु में लीनो,
 आठ कर्म को दूर हरद ॥ ज० ४ ॥ कल्याणरु निर्माण
 मोहत्सव, काख मिलरु आर्य सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पाप
 नगरी नाम कडायो, अस्त मयो निहां वान टिनद
 ॥ ज० ६ ॥ नव भल्ली नव लेल्ली राजा, गोरु अतिशय
 दिल में धरद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अथ जगसे,
 द्रव उद्योत को दीप करद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण
 दीवाली होइ, ध्यान धरोप्रभु वीर जिन्द ॥ ज० ९ ॥
 कार्तिक सुदि एकम दिन आवे, गौतम रंगल ज्ञान गहद
 ॥ ज० १० ॥ आत्मराम परमपद पावे, बल्लभ चित्तमें हर्ष
 अमद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

ज्ञाना नाराणु करीए, निमल गिरि जात्रा नाराणु
 करीए । पुर्व नाराणु वार शत्रु जय गिरि, अष्टमनिशद
 समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोटि सहस्र भय पातरु-शुटे,
 शत्रु जय सामाहग मरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छट दोष

अष्टम नभस्या र्ग चटिण गिरिवरीए ॥ वि० या० ॥३॥
 पु डरिक पद् जपिए मन हग्मे, अघ्यवमाय शुभ घरीण ॥
 वि० या० ॥४॥ पापी अमत्र्य न नचर टवे हिमक पण
 उद्रगी ए ॥ वि० या० ॥५॥ भूमि मथारे ने नागी तणो
 मग, दू धकी पगी हगीण ॥ वि० या० ॥६॥ एरुल
 आहागी ने सचित्त पग्दिगी, गुफ माय पट चगण ॥ वि०
 या० ॥७॥ पडिकमणा टोय त्रिधिशु ऋगण, पापपडल
 परिहरीए ॥ वि० या० ॥८॥ कलिकाले ण तीर मोट्टु,
 प्रवहण जेम भवदगीए ॥ वि० या० ॥९॥ उत्तम ण गिगिर
 सेवता पन्न रह भय तगीए ॥ वि० या० ॥१०॥

पयुपण पत्र सा स्तुति

सत्तर भेदी तिन पूजा र्चाने, स्नात्र महोत्सव र्चन जी ।
 डोल डमामा भेरी नफरी, भुङ्गरी नाट सुणीने जी ॥
 वीर जिन आगल भायना भावी, मानव भय फल लीजे जी ।
 पर्व पनुसण, पूर पुण्य, आर्या णम जालीने जी ॥१॥
 मास पास बली दमम दुवालम, चत्तारि अद्र कीने जी ।
 उपर बली दश दोय करीने, जिन चौवीश पूजीने जी ॥
 बडा कन्पनो छट्ट करीने, वीर बखाम सुणीने जी ।
 पढवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मगल वरतीजे जी ॥२॥
 आठ दिउम लगे अमर पलावी, अहमनो तप कीने जी ।
 नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ भाव

तेलाधर तिन वण रन्वाणक, गणपरमाट रदीजे जी ।
पाम नैमीवर अतर तीज, ऋषभ चरित्र तुम्हीज जी ॥३॥
वारसा सुत्र ने मामाचारी, सवळ्ळी पटियमिये जी ।
चैत्य प्रगाडी विधिगु कीज, मरुल जतु म्यामीजे जी ॥
पारणाने दिन स्वामीरत्नल, तीजे अविकर वडाई जी ।
मानविजय कह सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धायी जी ॥४॥

दूज विधि की स्तुति

दिन भरुल मनोहर, वीग द्विस सुविशेष । राय राणा
प्रणम, चन्द्र तणी जिहा रेस ॥ तिहा चन्द्र विमाने, शाश्व-
ता तिनपर जेह । हुँ तीज तणे दिन, प्रणमु आणी नेह ॥१॥
अभिनन्दन चन्द्रा, शीतल शीतलनाथ । अरनाथ सुमति
तिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनरर, जम
ज्ञान निर्माण । हुँ तिन तणे दिा, प्रणमु ते सुविहाण ॥२॥
परकाण्यो गोज, दुविध धर्मे भगवत । जेम तिमल कमल
दोष, विपुल नयन विक्रमत ॥ आगम शक्ति अनुपम, तिहा
निश्चय व्यरहार । वीने वी कीजे, पावकनो परिहार ॥३॥
गनगामिनी कामिनी, रमल सुफोमल चीर । चक्केमरी
केसर, मरम सुगध शरीर ॥ कर जोडी वीने, हुँ प्रणमु
तम पाप । एम लविजय कहे, पूरे मनोरथ माय ॥४॥

॥ पचमी की स्तुति ॥

श्रावण शुक्ति दिन पचमीये, जन्म्या नेमि जिणद तो ।
श्याम वरगल तन जीभन छ माग जगाट की लट मो ॥

सहस्र वरस प्रभु आउगु ए, गङ्गाचारी भगवत तो । अष्ट
 काम हले हृषीक, पद्मोत्तम मुक्ति महत तो ॥१॥ अष्टापद पर
 आदि चिन् ए, पद्मोत्तम मुक्ति मोक्षार तो । वामु पूज्य
 चण्डाचारी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ फारापुरी नगरीमा
 बली ए, श्री वीर तनु निर्वाण तो । सम्पत्तशिखर रीश
 सिद्ध हुआ ए, शिर उहुँ तेहनी धाण तो ॥२॥ नेमिनाथ
 धानी हुआ ए, भाखे सार वचनता । जीव दया गुण बेलठी
 ए, कीजे ताम जतन तो ॥ मृगा नबोलो मानरी ए, चोरी
 चित्त निवार तो । अनत तीर्थकर इम भणे ए, परिहरि
 पन्नार तो ॥३॥ गोमघ नामे यज्ञ भलो ए, दर्वा श्री अविद्य
 नाम तो । शासन मानिय ज कर ए, कर बली उन्न
 राम तो ॥ तपगल नापक गुणनीलो ए, श्री विद्वर
 सरिराय तो । ऋषभदाम पाय सेवतां ए, बल्लभ
 अवनार तो ॥४॥

अष्टमी की मूर्ति

मंगल आठ री जम आगल, भाव
 आठ जातिना बल्लभ भरीने, नगव
 वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करता शि
 आठमनो तप गतां अम धर, मंगल
 अष्ट रुम यगि गज गजन, अष्ट
 आठमे आठ सुरूप विचारी, म
 अष्टमी गति जे पगेता जिनार,

आठमनो तप करतां अम घग्, नित नित राधे रग जी ॥२॥
 प्रातिहारज थाठ पिराजे, ममरसग्ग चिन गजे जा,
 थाठमे थाठसो थागम भागी, भगी मन मशय भाज जी ।
 थाठे जे प्रयचननी माता, पाले निरनिचाने जी ।
 थाठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चिन घागे नी ॥३॥
 अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव भर फल लीने जी,
 मिट्टाई देवी जिनवर सेवी, अष्ट महामिट्टि दीज जी ।
 थाठमनो तप करतां लीजे, निमल केवलनाग जी,
 धीरविमल कवि सेवक नय रुहे, तपधी कोड कल्याण जी ॥४॥

एकादशी की स्तुति

एकादशी अति रूअडी, गोपिंद पूछे नेम, मोण मारण ए
 पर्व महोदु, कठो मुजशु तेम । चिनवर कल्याणक अति
 घणा, एक सो ने पचाम, तीखे कारण ए पर्व महोदु,
 करो मौन उपवास ॥१॥ अगीपार थावक तणी प्रतिमा, नही
 ते जिनवर दव, एकादशी एम अधिक सेरो, रनगजा जिम
 रेव । चौथीश जिनवर तपल सुएकर, जैमा सुरतरु चम
 जेम गग निमल नीर जेहवो, करो जिनशु रग ॥२॥
 अगीपार अम लखारीये, अगीपार पाठा मार, अगीपार
 कबली वीटणा, ठवणी पुजणी सार । चावखी चगी विविध
 रगी, शाख तखे अनुसार, एकादशी एम उजवो, जिम
 पामीये भवपार ॥३॥ चर कमल नयणी कमल वयणी,

कमल मुनीमल गाय, भुज नृद वद इन्द्र देवें, म
ना सुख थाय । एसाङ्गी एम मन र्हे, अने नं ३
शिष्य शामन दरी पिघ्न निरागे ॥ ३ ॥

मिद चरनी हं ॥ ३ ॥

॥ श्री वीश स्थावर पद की स्तुति ॥

पूछ गौतम वीर निखदा, समउत्तरण उठा गुणददा, पृथित
 अमर हरिदा । केम निरूपे पद निनचदा, मिणविध तप
 करता मन फदा, टले दुरितह ददा ॥ तत्र भाव्ये प्रभुनी गत
 निदा, सुख गौतम वसुभृति नदा, निमल तप अरिदा ।
 वीश स्थानरुतप कर महदा निम तारक ममुद्राय चंग, निम
 ण तप सति इदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहत भरीजे, वीजे
 सिद्ध परयण पद वीजे, आचारज भ्रम टरीजे । उपाध्याय ने
 माधु ग्रहीज नाणदमण पद विनय बर्हीजे, अगियाग्ने चारि
 लहीजे ॥ २ ॥ भवप्रधारिण गणान, किरियाण तरस्म करीजे,
 गोयम जिग्णाण वरीजे । चारि नारा श्रुत तित्यस्स वीजे
 वीजे भा तप करत मुणीने, ए सति निन तप लीजे ॥ ३ ॥
 आदि 'नमो' पद सत्ते ठरीश, नार पत्तर उली वार छरीश,
 दश पणवीश समवीश, । पाच ने मडमट तेर मणीश,
 सित्तेर नव किरिया परवीश, नार अट्टारीश घोरीश ॥
 सत्तरा एकावन पीस्तालीश पाच लोमम्म काउस्सग्ग
 रहीश, नवमारवाली वीश । एक एक पद उपवास ज वीश,
 माम छण एक थोली वरीश, णम सिद्धात जगीश ॥३॥
 शक्ते ण्णामणु विविहार, उट्ट अट्टम मामरुमण उदार,
 पक्कमणु दोप वार । इत्यादि विवि शुरुग्गम धार, एक
 पद आराधन मन पार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातम

यत्त स्त्रे मनाहार, दयी मिद्राइ गामन समाल, विध्य
मिद्राय हार । योनाविजय तत्त उपर प्यार, शुभ मरियण
धनो आगार, श्रीविजय जयकार ॥४॥

दीराली की मूर्ति

मनोहर मूर्ति महावीर नर्णी, जिणे मोल पहोर दशना
पमणी । नर मल्ली नर लच्छी नपनि मुणी, कही गिर
पम्या विभुवन घणी ॥१॥ गिर पदाता अपम चउदश
भस्त, नारीश लशा गिर माम यित । छट्टे गिर पाम्या वीर
वली, कर्निक वरी अमारम्या निर्मली ॥२॥ आगामी भारी
क्षार कथा, नाराली रूप जेह लया । पुण्य पाप फल
अज्भयले कथा, मया तहत रुगिने मदद्या ॥३॥ नरी
दर मिली अत्रोत कर, पमाले गौम जान रर । जानमिन
मर्गुण विम्बरे, निन्शामनमा जयकार कर ॥४॥

श्री उपमान की मूर्ति ।

वार चिनेखर उपशिणे ए, माभतो भविद्र मुचाण तो,
उपमान विना नवि ररतो ए, गणयो श्री नरकार तो ।
गीतारथ गुण योगी ए, यहाए शुद्ध उपमान तो,
किरीयानी आलोपण ए, लडीय मुगुरु पाय तो ॥१॥
पच मगलनु १ जाणीये ए, ए पहनु उपमान तो,
प्रतिरदननु - जाणीय ए, ए बीजु उपमान ता ।

१ नरकार मन्त्र = इरियावहा

॥ श्री शीश स्थाक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम नीर जिणदा, सममरण बडा मुमरदा, १नित
 प्रमर छरिदा । केम निरारे पद निनचदा, मिणनिध तप
 फरता भन फदा, टले दुरितह ददा ॥ तप भासे प्रभुनी गत
 निदा, सुण गौतम वसुभूति नदा, निर्मल तप अरनिदा ।
 शीश स्थानरु तप कर महदा जिम तारक समुदाये चंदा, निम
 ण तप सवि इदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिउत मर्गाजे, शीजे
 मिद्ध परयण पद शीजे, आचारज धर ठवीजे । उपाध्याय ने
 माधु ग्रहीज नाणदमण पद विनय वहीजे, अगियागमे चारिउ
 लहीजे ॥ बभनयधारिण गणाने, किरियाण तमम्म करीजे,
 गोयम जिणाण लहीजे । चारिउ नाण उत तित्थस्स कीने
 शीजे भा तप फरत सुखीने, ए सवि विन तप लीजे ॥२॥
 आदि 'नमो' पद मवते ठवीण, नर पन्नर यली नर छरीश,
 दश पणरीश सगरीण, । पान ने मडमठ तेर गणीण,
 मित्तेर नर किरिया पवरीण, नर अट्टारीश चौरीम ॥
 सवरा एकावन पीस्तालीश पाच लोगम्म फाउस्सग्ग
 रहीण, नरकारयली शीश । एक एक पद उपवाम ज वीश,
 माम छए एक थोली उरीश, एम सिद्धांत जगीश ॥३॥
 शक्ते एनामणु तिनिहार, उट्ट अट्टम मामलमण उदार,
 पक्खिमणु दीय वार । इत्यादिउ विवि गुस्सगम धार, एक
 पद आराधन भन पार, उचमणु विविध प्रकार ॥ मातग

पन कर मनोहार, ढवी मिट्टाइ शामन गवाल, विघ्न
मिटारण हार । रीमात्रिलय तन उपर प्यार, शुभ भरियण
धर्यो यत्पार, रीमिणाय जयहार ॥४॥

दीनार्ली की स्तुति

मनाहर मूर्ति महावीर नर्णी, जिण्ये सोल पहर देशना
पमणी । नर मल्ली नव लच्छी नृपनि सुणी, कही शिर
पाम्या त्रिभुवन धरणी ॥१॥ शिर पशोता श्रुपम चउदज
मन्ते, गरीग लखा शिर माम थिने । छट्टे शिर पाम्या वीर
वली, फरिंरु वरी अमारस्या निर्मली ॥२॥ यागामा भारी
भाप रखा, रीनार्ली रुन्प जेह लया । पुण्य पाप फल
प्रभयखे रया, मवी नहत्ति करीने मदखा ॥३॥ मरी
त्व मिली उधान रर, पम्माते गौ म वान रर । ज्ञानप्रिमन
मन्गुग'रिम्बर, जिण्जामनमा जयहार कर ॥४॥

श्री उपदान की स्तुति ।

बीर चिने न उपदिश ए, याभलो भरिण मुनाए तो,
उपदान विना नकि मरने ए, गणसे श्री नरकार तो ।
गीतारथ गुण योगदी ए, उहीए शुद्ध उपदान तो,
किरीयाना गालोयण ए, लडाये मुगुरु पास तो ॥१॥
पच मगलनु (जाणीये ए, ए पहलु उपदान तो,
प्रतिप्रमखनु * जाणीये ए, ए बीजु उपदान ता ।

१ नवकार मात्र = इरियावहा

चैत्य (सप्तमनु मार्गाय ८, ८ चोधु उपधान तो,

मर्गा तीर्थंरु इम भणे ८, उपधान करा उद्गमान तो ॥२॥

पूछे, श्रुतस्वय मिद्रस्तय ३ ए, छद्दु रहो उपधान तो

अमरगम्भन्वधनु जाणीये ८ धरीये ततीय ध्यान तो ।

करतानाम स्तय लोगस्सनु ८, पाचमु शुभ उपधान तो

निंदाश्री महानिशीय मृत्मा ए, भाग्यु श्री जिनगन तो ॥३॥

वीश महा महोत्तर आरीय ए, श्री गुम्बरनी पाम तो,

८ तंभाद महापो टाठमु ८, पधगर्गो चिनराज तो ।

सिद्धश्रीफल द्रय चडापीये ८, माणिस्यादि माग तो,

साधुमय्यग् दष्टि सुरज समी ८, दवी मिद्रायी महाय तो ॥४॥

लही चैत्री पूनम री स्तुति ॥६॥

गोपयु डरीरुमडण पाय पाय प्रणमी जे, आदीश्वर ि न चडावी

त्रीजेतमि रिना रेरीश तीर्थंरु, गिरि चढिया आणदा जी

आधिश्रागममाहि पुडरीरु महिमा, भाग्यो ज्ञान दिणटाजी

दश पैत्री पूनम िन दवी चक्रेसरी, सांभाय घो सुपरटाजी ॥१॥

मिते १ अरिहंत चेइयाण २ अन्नत्य । ३ पुक्कररर । ३ मिद्रणा

सतराड्याण । ४ नमुत्थुण ।

रहीश यह स्तुति (थुर्) गर वागत भी क मकते हैं ।

माम

शक्ते

परिष

पट ३



त्रिकाल-देवदन्दन विधि

मामापिष्ट पापघ विधि सहित

—३३—

प्रथम लेनेवालों की शुभ नामावली ।

	पुस्तकें
श्रीमान् रूपचन्द्रजी मगगचर्जी कोचर हैदराबाद	१२५
„ लन्मीचन्द्रजी धमालालजी फगणानट फलरूता	१२५
„ हजारीमलजी मित्रचन्द्रजी रामपुरिया जी कोनेर	४०
„ इन्दरचन्द्रजी भवरलालजी ढड्डा भीमानर	२०
„ लन्मीचन्द्रजी फतेहचन्द्रजी कोचर „	२०
„ सेठ कालीदाम जीवराज शाह पालनपुर	२०
„ गौडीदासजी पारमदामजी ढड्डा जयपुर	२०
„ था दमलजी चनगमलजी कोचर „	२०
„ नेमचन्द्रजी प्रेमचन्द्रजी कोचर „	२०
„ रतनचन्द्रजी हीराचन्द्रजी कोचर „	२०
„ नीरतनमलजी ढड्डा „	२०
„ रूपचन्द्रजी शाहवाल प्रतापगढ़	२०